▼ प्रवीणा, चौथी, भावनगर, गुजरात

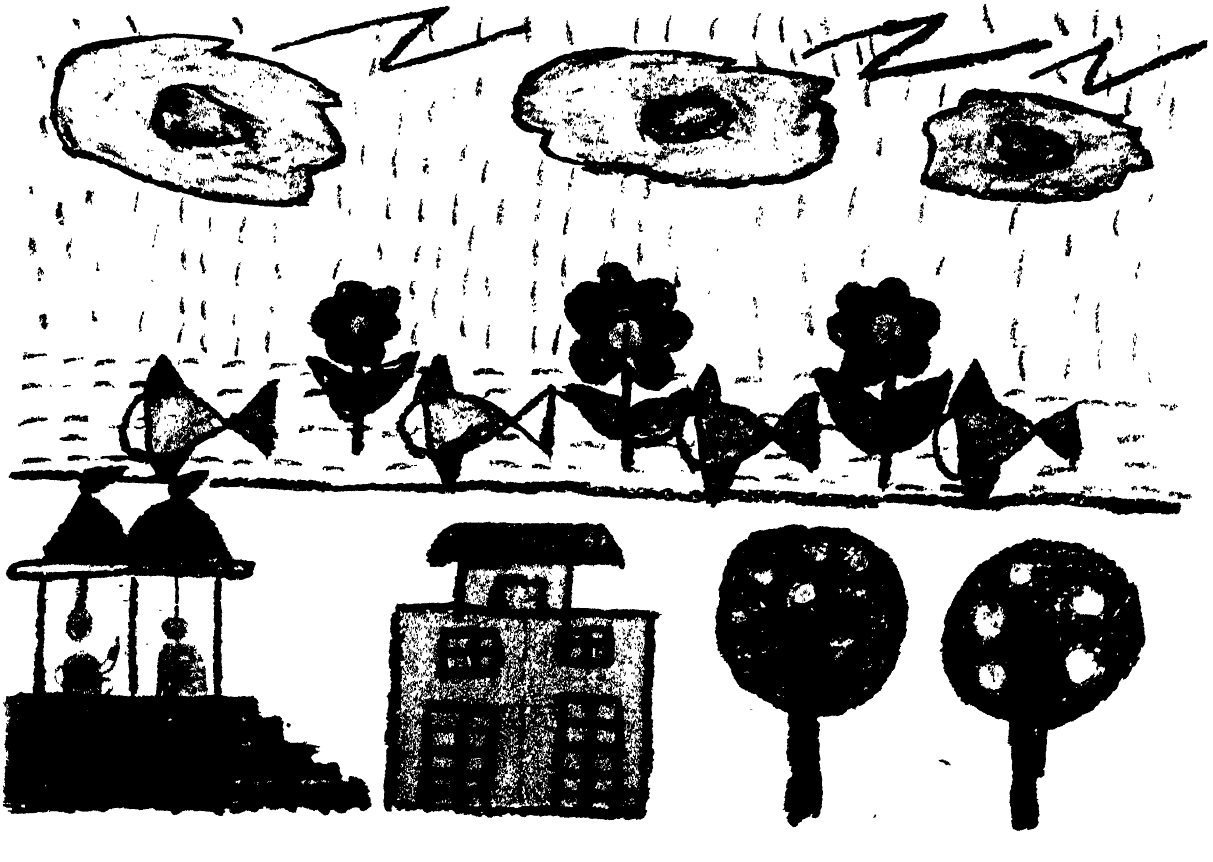

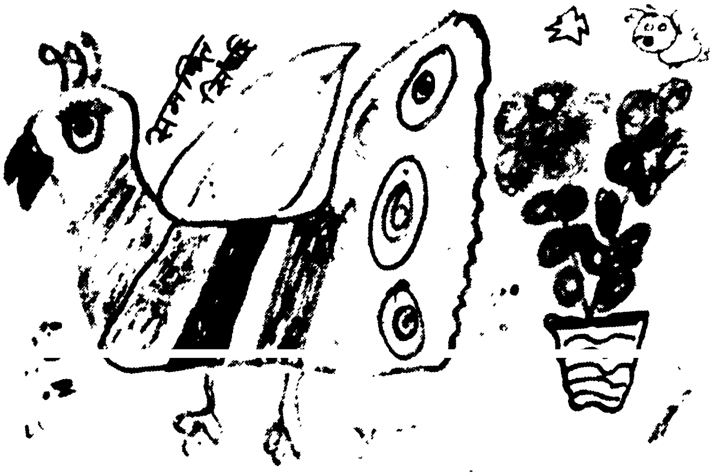

समकित सिंघई, तीसरी, सागर, म.प्र.

136 वें अंक में ....

विशेष

10 ❑ वो सुबह कभी तो आएगी...

15 ❑ मसालों का सफ़र

कविताएँ

13 ❑ हवा

22 ❑ बिल्लो रानी

36 ❑ हम तो हैं बेहद हैरान

कहानी

23 ❑ पूसी की वापसी

धारावाहिक

37 ❑ किस्सा-बुरातीनो का : 7

हर बार की तरह

3 ❑ मेरा पन्ना

14 ❑ हमारे वृक्ष - 56 : लाल चम्पा

28 ❑ खेल काग़ज़ का

34 ❑ माथा - पच्ची

और यह भी

2 ❑ पाठक लिखते हैं

9 ❑ गुरमीत : अब सिर्फ़ याद शेष है...

30 ❑ विश्व की खोज और मसाले

आवरण : मलक्का का नक्शा। नक्शा मलक्का की खोज के बाद पुर्तगालियों के वहाँ बस जाने के बाद की स्थिति दर्शाता है।
चित्र द मार्शल कैवेन्डिश इलेस्ट्रेटेड एन्सायक्लोपीडिया ऑफ डिस्कवरी एण्ड एक्सप्लोरेशन से साभार।

चकमक
मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-12 अंक-6 दिसम्बर, 1996
सम्पादक
विनोद रायना
सह-सम्पादक
राजेश उत्साही
कमिता सुरेश
सम्पादन सहयोग
टुलटुल बिस्वास
कला-सज्जा
जया विवेक
उत्पादन/वितरण
कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा
एक प्रति : पाँच रुपए
छमाही : पच्चीस रुपए
वार्षिक : पचास रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चैक न भेजें।

कागज : यूनिसेफ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य,
ई-1/25,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462016
(म.प्र.)
फोन : 563380

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम से जुड़ने के बाद से चकमक मैं पिछले सात सालों से पढ़ता आ रहा हूँ। चकमक का हिन्दी में विज्ञान पत्रिका के रूप में कोई विकल्प नहीं नज़र आता। परन्तु मुझे वह बच्चों के स्तर से कई बार ज़्यादा भारी भी लगती है। इसके विशेष लेख तो बड़ों के लिए ही होते हैं। मुझे इसके 'मेरा पन्ना' और 'अपनी प्रयोगशाला' कालम सबसे अच्छे लगते हैं।

पिछले कुछ अंकों में हुई कुछ भूलों की ओर आपका ध्यान आकृष्ट कराना चाहता हूँ।

मई अंक में अनुक्रमणिका में हमारे वृक्ष में मंदार का नाम लिखा है। परन्तु अन्दर वर्णन मंदार के बजाय बादाम का है। इसी तरह अगस्त के अंक में विशेष लेख मशरूम के अन्तर्गत लिखा है कि फफून्द परजीवी होते हैं। जो कि सच नहीं है। सभी फफून्द परजीवी नहीं होते हैं, अधिकांश फफून्द मृतोपजीवी होते हैं जो सडे-गले मृत कार्बनिक पदार्थों से अपना भोजन प्राप्त करते हैं, जैसे कि सभी मशरूम। कुछ फफून्द परजीवी होते हैं जो वनस्पतियों और मनुष्यों में रोग फैलाते हैं। इनके अतिरिक्त कुछ फफून्द सहजीवी भी होते हैं, जो दूसरे जीव के साथ रहते हैं, जैसे पत्थर फूल।

यह जानकारी माध्यमिक स्तर की पुस्तकों में उपलब्ध है। अतः फफून्द को केवल परजीवी कहने से भ्रम होता है। उम्मीद है भविष्य में इस तरह की भूलों से बचने का प्रयास करेंगे।

❑ **डॉ. किशोर पवार, सेंधवा, म.प्र.**

(आपका कहना सही है। इन गलतियों के लिए हमें खेद है। -चकमक)

पाठक लिखते हैं

चकमक का अगस्त अंक देखा। अगस्त अंक में काशीनाथ त्रिवेदी पर आलेख अच्छा लगा। त्रिवेदी जी ही गिजुभाई को हिन्दी वालों के पास लाए। आलेख के अन्त में एक वाक्य है - 'उन्हें उसी तत्परता से चाहिए होता था।'

इसका सरल विकल्प वाक्य क्या आप पसन्द करेंगे? - 'वे उसी तत्परता से चाहते थे।' क्या इसमें अर्थगत अन्तर आता है, जबकि यह वाक्य संरचना सरल है।

'बिंदी' और 'चंद्रबिंदु' के उच्चारण भी अलग-अलग हैं। अतः 'संजो' का 'सँजो' (पृष्ठ 32 कालम 2) होना चाहिए।

❑ **डॉ. श्री प्रसाद, वाराणसी, उ.प्र.**

सितम्बर, 96 का अंक प्राप्त हुआ। इसमें 'खेल अंकों का' सचमुच एक मज़ेदार खेल है। इसमें लिखा है कि 3 चुनने पर यानी रूमाल हर तीसरे दोस्त के पास जाने पर 3 चक्करों में रूमाल सबके हाथों में से खेलते हुए गुज़रेगा।

पर भैया जी तीन चक्करों में 9 नवम्बर के खिलाड़ी के पास तो रूमाल आएगा ही नहीं। अब आपका क्या कहना है, लिखें।

❑ **रवि दुआ, परासिया, म.प्र.**

(छपाई की गलती के कारण चाल की संख्याओं में '9' छपने से छूट गया है। परन्तु रवि इस खेल को खेलकर देखो, 9 नम्बर के खिलाड़ी के पास भी रूमाल आएगा। -चकमक)

मसालों पर सुन्दर लेख के लिए बधाई! सुन्दर ले आउट, जानकारी ठूँसने पर लगाम बहुत अच्छा लगा।

एक-दो सुझाव, उपशीर्षकों का उपयोग क्यों नहीं? दूसरे देशों/प्रदेशों, के नाम का आधुनिक रूप चेक करें, जैसे फारस = ईरान, मलक्का = इण्डोनेशिया का हिस्सा, मध्य एशिया की जगह मध्य पूर्व ज़्यादा उचित है। और एक टिप्पणी- दवा के काम की बात ने थोड़ी अपच पैदा कर दी। ख़ासकर आयुर्वेद का त्रिदोष सिद्धांत (वायु, पित्त, कफ) वैज्ञानिक रूप से गड़बड़ लगता है।

चित्र एक (पृष्ठ 22) या तो रंगीन होना चाहिए था या ज्यादा स्पष्ट छपाई होती - इसमें दालचीनी, तेजपात और इलायची को छोड़कर कुछ समझ नहीं आता।

इन बातों के बावजूद लेख बहुत अच्छा लगा। फिर से बधाई!

❑ **सुब्बू, होशंगाबाद, म.प्र.**

रचनाकारों के नाम

मेरा पन्ना का चित्र पेज देखो। कितने प्यारे-प्यारे गुड्डे गुड़ियाएँ हैं। पर क्या इनमें से कुछ थोड़े गिचड़-पिचड़ नहीं लग रहे। हम चित्रों की बात नहीं कर रहे। उनके बनाने वालों के नामों की बात कर रहे हैं। कहीं तो बारीक चींटियों की लाइन-सी चली आ रही है। तो कहीं नाम गुड़िया के फ्रॉक पर ही चढ़ा आ रहा है। ऐसे में चित्र की खूबसूरती तो कम हो जाती है न।

यह तो हुई नाम लिखने की मुसीबत। पर नाम नहीं लिखना तो और भी परेशानी पैदा कर देता है। कई बार बहुत-से ऐसे चित्र आते हैं जिन पर उनके बनाने वालों के नाम ही नहीं होते। कभी नाम होता है तो उम्र नहीं, दोनों हों तो पता अधूरा। अब ऐसे चित्र हम छाप भी दें तो चकमक के जिस अंक में वो छपेंगे वह अंक उस चित्रकार तक पहुँचाएँ कैसे?

यानी कुल मिलाकर पूरी बात को यूँ समेटें कि जब भी चकमक के लिए कुछ भेजो - कहानी/कविता/चित्र या सिर्फ चिट्ठी ही, तो हर बार अपना नाम, उम्र या क्लास, और घर या स्कूल का पूरा डाक पता ज़रूर लिखना। और चित्रकारों के लिए यह सुझाव कि नाम, उम्र, पता आदि चित्र के ऊपर या बाजू में मत लिखना। चित्र के पीछे विस्तार से सब चीज़ें लिख भेजना। अगर चित्र के बारे में कुछ लिखना चाहो तो वह भी पीछे ही लिखना।

आख़िरी बात, चकमक के लिए अपने मन की बातें-कहानी, कविता, चित्रों के रूप में भेजना जारी रखो।

हम उनका इंतज़ार करेंगे।

❑ **चकमक**

मेरा पन्ना

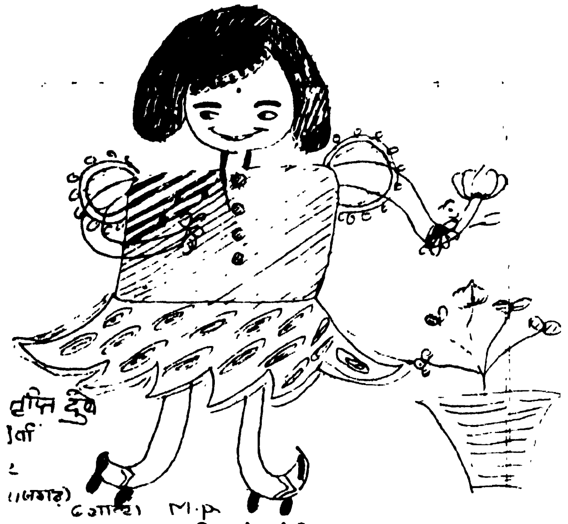

तृप्ति दुबे, नौवीं, माचलपुर, राजगढ़, म.प्र.

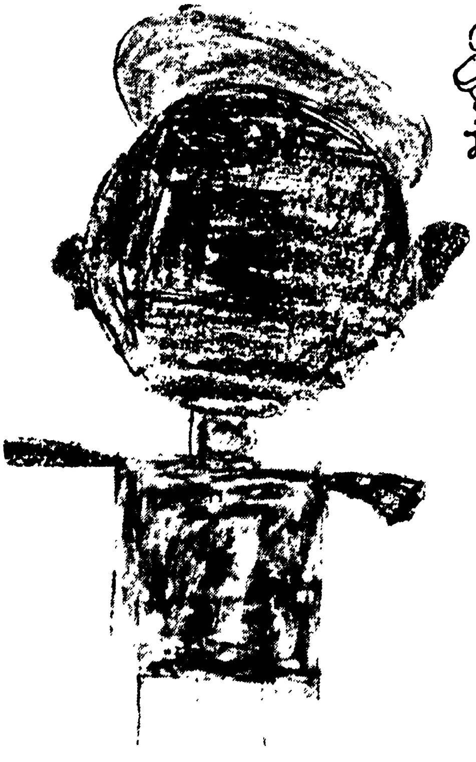

श्वेता पदार, तीसरी, सेंधवा, म.प्र.

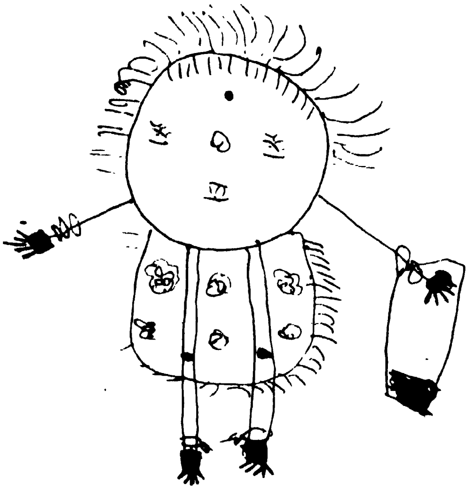

प्रीति साहू, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.

हरिशंकर साहू, तीसरी, पैंड्रा, बिलासपुर, म.प्र.

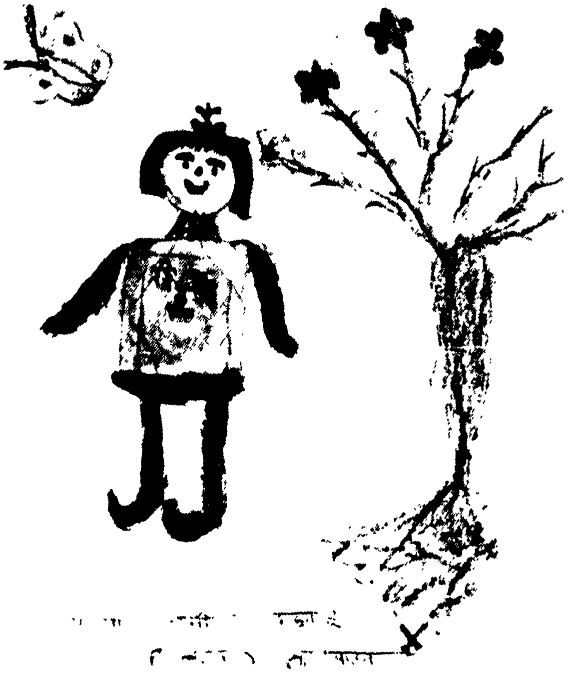

प्रतिभा नामदेव, तीसरी, उड़ना, जबलपुर, म.प्र.

मेरापन्ना

चाचा जी की शरारत

गर्मी की छुट्टी में हम अपने मामा जी के यहाँ जा रहे थे। साथ में मेरे चाचा, भाई–बहन, मम्मी–पापा थे। रेल के डिब्बे में बहुत भीड़ थी। किसी तरह हम लोग रेल पर चढ़े। चढ़कर हमने देखा कि रेल में बिलकुल जगह नहीं है। तभी चाचा जी को शरारत सूझी। उन्होंने साँप–साँप चिल्लाना शुरू कर दिया। सभी लोग अपना सामान उठाकर भागने लगे। तब हमें आसानी से जगह मिल गई। इस तरह चाचा जी की शरारत से हमें जगह मिल गई।

□ विजया भार्गव, छठवीं, उज्जैन, म. प्र.

□ गौरव दुबे, बम्हनीडीह, बिलासपुर, म. प्र.

मेरा अरुणाचल

सबसे न्यारा सबसे प्यारा
राज्य है मेरा अरुणाचल
ऊँची-नीची धरती अरुणाचल
ऊँचे-नीचे खेत यहाँ पर
हरे-भरे हैं इसके जंगल
हरे-भरे हैं खेत यहाँ
कितने जंगल अरुणाचल में
लकड़ी की भी कमी नहीं
कितनी नदियाँ अरुणाचल में
पानी की भी कमी नहीं
सबसे न्यारा सबसे प्यारा
राज्य है मेरा अरुणाचल

□ स्वाती दीक्षित, चौथी, लाँगडींग, अरुणाचल प्रदेश

जगल की सैर

एक दिन मैं और मेरा दोस्त लोकेन्द्र गाँव के किनारे के जंगल में घूमने गए। घूमते–घूमते अचानक एक जानवर हमारे सामने आ गया। वह हमें घूर–घूरकर देखने लगा। हम दोनों काँपने लगे। फिर मेरे दोस्त ने कहा कि हिम्मत से काम लो। भगवान जो भी करता है वो ठीक ही करता है। और मेरे दोस्त ने कहा क्यों न हम भी इसे घूर–घूरकर देखने लगें? और थोड़ी देर में वह जानवर भाग गया। फिर हम गाँव में वापस आ गए और हमारे दोस्तों से कहा और फिर हम खूब हँसे।

□ पवन कुमार, आठवीं, भादूगाँव, होशंगाबाद, म. प्र.

पिश्ती की कहानी

दो तीन साल पहले की बात है जब मैं कक्षा तीन में पढ़ती थी। मेरे साथ ज्योति दीदी रहती थी। एक दिन ज्योति दीदी के बड़े भाई ने ज़हर खा लिया। तो उनकी मम्मी मेरी मम्मी को बुलाने आईं तो मेरी मम्मी उनके साथ गईं। तो मेरे घर से कुछ दूर पर ही काला बाबा आश्रम है। वहाँ से एक कुतिया हम लोगों के पीछे चल पड़ी। हम लोग उनको डॉक्टर के पास दिखाकर लौटे तो कुतिया हम लोगों के पीछे–पीछे चली आई। वो एलसेशियन नस्ल की थी। उसके खुजली थी तो मेरी मम्मी ने उसे गंधक लगाकर ठीक किया। उसके बाद वह हमारे यहाँ रहने लगी। हमने उसका नाम पिश्ती रखा। वह महिलाओं पर नहीं भौंकती है। और आदमी को गली से गुजरने नहीं देती है। चूँकि हमारी माँ कार्यकर्त्ता हैं जिससे वो बाहर चली जाती हैं। तो वो पूरा घर और गली देखती है। वो बाहर की मिठाई नहीं खाती है। वो गरी, गाजर, बर्फ़, केला, सेब आदि चीज़ें खाती है। फेंककर रोटी दो तो नहीं खाती है। गुस्सा आ जाए तो चार–पाँच दिन घर नहीं आती है। और गेट पर बैठी रहती है। बड़े मनाने से आती है। हमारे साथ खेलती है।

□ पल्लवी सिंह, जौनपुर उ. प्र.

अधिकार

पिंटू भैया ले गुलेल,
झट बाहर को दौड़े।
जल्दी में वो थे शायद,
खाए नहीं पकौड़े॥
बगुलों के वो चक्कर में,
जा पहुँचे तालाब।
फिसला पैर गिरे जल में,
कपड़े बचे ना साफ़॥
गन्दे कपड़े लेकर के,
लौट के घर को आए।
अपने किए व्यवहार पर,
वो थे बहुत पछताए॥
कहने लगे पक्षियों का अब,
होगा नहीं शिकार।
उनको भी स्वतंत्र रहने का,
है जन्मसिद्ध अधिकार॥

□ ज़ाबिर अली, पन्द्रह वर्ष, लखनऊ, उ. प्र.

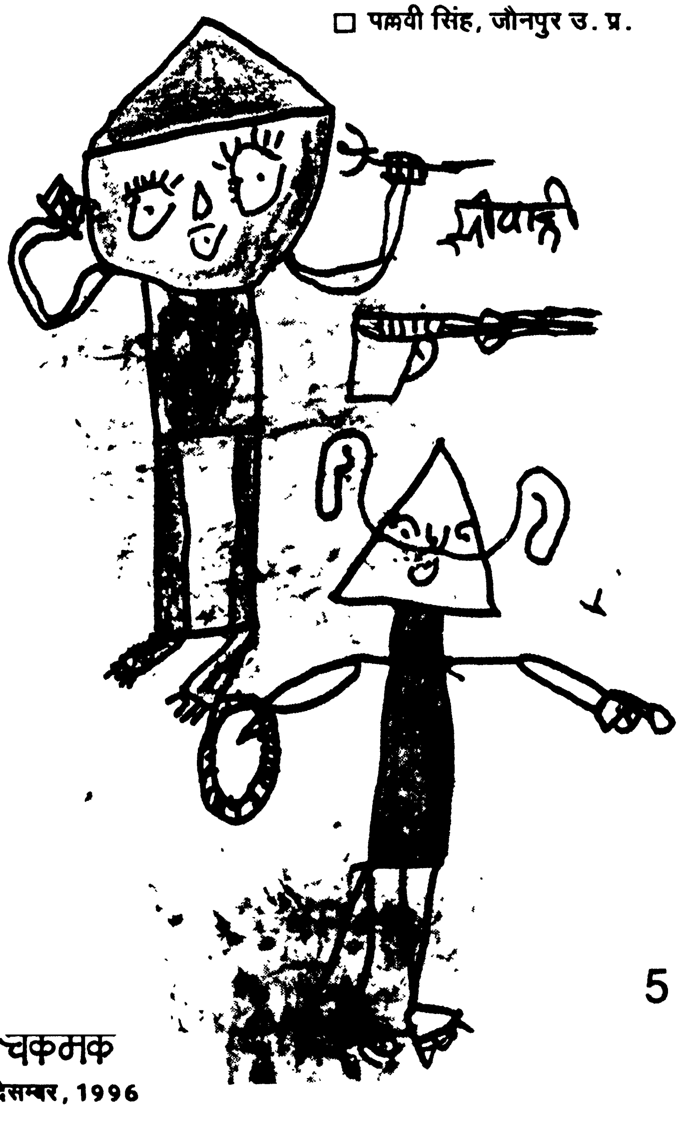

मेरा पन्ना

मेरी गाय

यह मेरी प्यारी-सी गाय
सुबह-सुबह जंगल को जाती है
घूम-घूमकर जंगल में यह
घास-पत्तियाँ खाती है
रोज़ शाम को यह घर आती
प्यारे से बछड़े को दूध पिलाती

☐ टीना दिलीपराव हिंगास
सातवीं, धार, म.प्र.

☐ साक्षी मिश्रा, छह वर्ष, डिंडौरी, मण्डला, म.प्र.

दीदी

मेरी दीदी को बच्ची पैदा हुई। वो बीमार हो गई उसके पैर में नील पड़ गए। फिर उसके घुटने में नील पड़ गए। फिर उसकी पीठ पर भी नील पड़ गए तो पापा उसे डॉक्टर के पास ले गए। डॉक्टर बोला इसको मेडीकल कॉलेज ले जाओ। उसका दो बोतल गन्दा ख़ून निकला। उसको नया ख़ून चढ़ाया। फिर दूसरा डॉक्टर आया उसने बताया कि बच्ची मर गई। फिर हम और दीदी दत्ता आंटी के घर रात को रुक गए। पापा सुबह आकर ले गए। सुबह पापा जब आए तो मम्मी और पापा रो रहे थे। दीदी ख़ूब रोई चुप नहीं हो रही थी।

☐ शीतल जुनेजा, छह वर्ष, लखनऊ, उ.प्र.

खरगोश

☐ किरण चन्द्रवंशी, आठ वर्ष, बेलरगोंदी, राजनांदगाँव, म.प्र.

खरगोश रूई का गोला
लगता है कितना भोला
है आँखें लाल नशीली
काया है बड़ी सजीली
वह उछल कूद करता है
लोगों का मन हरता है
जब होता है मुश्किल में
तो घुस जाता है बिल में

☐ नुलेश कुमार, ग्यारहवीं, गुरूर, दुर्ग, म.प्र.

मेरा पन्ना

एक सपना

मैंने देखा इक सपना
सपने में इक घर अपना
अपने बिस्तर पर सोई हूँ,
सुख सपनों में खोई हूँ।
देख रही इक सुन्दर फूल,
और सड़क पर उड़ती धूल।
कर रही हूँ घर का काम,
मम्मी देती मुझको आम,
सुला रही गुड़िया को अपने,
शायद देख रही है वो सपने।
सपनों में है खोई गुड़िया
मम्मी खाती दवाई की पुड़िया।
पापा देते मुझको पैसे,
खर्च करूँ मैं उनको कैसे।
क्या मैं लड्डू, पेड़े खाऊँ,
या जाके गुल्लक में डालूँ।
सोच रही थी मैं ये सब,
माँ ने उठा दिया मुझको तब।
मैंने देखा इक सपना,
सपने में इक घर अपना।

☐ मधुलिका स्वर्णकार, छठवीं

☐ अन्जना राड़ी, छठवीं, ग्वालियर, म.प्र.

जाड़ा आया

जाड़ा आया जाड़ा आया
गुलाबी गुलाबी ठण्ड लाया
चाहिए सबको धूप का साया
जाड़ा आया जाड़ा आया
ठण्ड ने अपना जुल्म ढाया
चाहिए सबको चाय का प्याला
जाड़ा आया जाड़ा आया

☐ दिव्या पाराशर, दूसरी, उज्जैन, म.प्र.

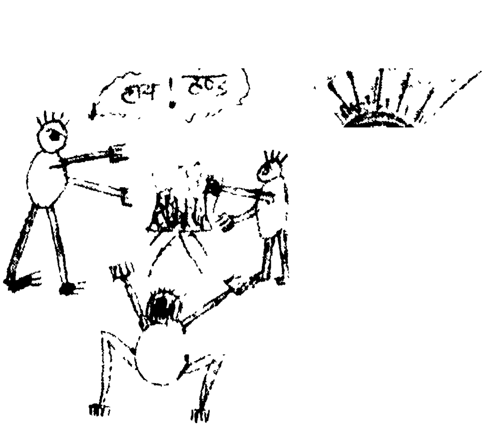

☐ प्रमोद वर्मा, दूसरी, महिदपुर [illegible] म.प्र.

मेरी दीपावली

▢ रेखा बाई, पहली, बिठूर, अजमेर, राजस्थान

दीपावली मेरा सबसे पसंदीदा त्यौहार है। इस दिन घर की सफ़ाई भी हो जाती है और राम जी के आने की खुशी भी मना ली जाती है। हमारे स्कूल में जब दीपावली मनाई गई तो टीचरों ने यही बताया। मैंने तो दीपावली बहुत धूम से मनाई पर सावधानी से। मैंने पूरे घर में दिए जलाए। रात के समय सभी लोग अपनी छत पर नज़र आ रहे थे। पूरा गाँव दीपों से जगमगा रहा था। और पटाखों से गूँज रहा था। एक आदमी ने राकेट छोड़ा तो वह दूसरे आदमी के टकले पर पड़ गया। वह गुस्से से आया और राकेट छोड़ने वाले को दो–तीन थप्पड़ लगा दिए। इसी तरह के बहुत से क़िस्से दीपावली के दिन हुए। दीपावली के दिन मेरा दिल कह रहा था कि इन्हीं दीपों को देखती रहूँ। अक़्सर तो मैं ख़्यालों में डूब जाती थी। दीवाली के दिन जी चाह रहा था कि यह दिन कभी न जाए। बार–बार रामजी की तस्वीर सामने आ रही थी। मैं तो रात भर छत पर ही बैठी रही। एक दीप बुझता तो मेरा दिल टूट जाता और मैं जल्दी से जाकर उसे जला देती। सुबह जब माँ उठी तो दो–तीन माचिस की डिब्बियाँ ख़ाली देखकर मुझे बहुत डाँटा।

▢ कनीज़ मासूमा, छठवीं

हम टूर पर गए

एक बार मैं और मेरे पापा टूर पर गए। वहाँ मैंने एक हौज देखा। उस में एक बड़ा–सा कमल खिला था। और उसी हौज में एक साँप गिर गया था। साँप का दम निकलने ही वाला था कि साँप वहाँ से निकलकर भाग गया। उसे देखकर मैं डर गया। किन्तु साँप भी डरकर भाग निकला। इसके बाद मैं और पापा आगे बढ़ गए। वहाँ पर एक सीमेन्ट का हाथी दिखाई दिया। मैं समझा सच का हाथी है। पास जाने पर देखा कि सीमेन्ट का हाथी है। मैं सीमेन्ट के हाथी के अन्दर घुसा तो उसमें मकड़ी और छिपकली दिखी। वहाँ भी मैं डर गया।

▢ शशिप्रकाश राय, छठवीं, जोकहरा, आजमगढ़, उ. प्र.

गुरमीत : अब सिर्फ़ याद शेष है...

चकमक प्रकाशाको अत्यंत दुख से सूचित करना पड़ रहा है कि आपका प्रिय रचनाकार यानी मेरा छोटा भाई गुरमीतसिंह सन्धू हमसे सदा के लिए बिछुड़ गया है। आपको यह जानकर दुख होगा कि नित्य की तरह 24 सितम्बर, 96 को पशु लेने के लिए वह घर से दोपहर 2.30 बजे ढाई किलोमीटर दूर जंगल में गया और वापस नहीं आया। हमने पूछा-तलाशी की मगर कोई पता न चला। इसके बाद तीन-चार दिन तक लगातार ढूँढा-तलाशा गया पर वह नहीं मिला। अन्त में 27 सितम्बर को रास्ते से कुछ दूर अधबने एक कुएँ में उसकी लाश मिली। आगे कभी विस्तार से बताऊँगा।

दुखी ह्रदय से
दिलजीतसिंह
(दिलजीत, गुरमीत के बड़े भाई हैं।)

गुरमीत सचमुच में चकमक का प्रिय रचनाकार था। शिवपुरी जिले के कस्बे गढ़ी बारोद से कुछ नन्हें रचनाकारों की रचनाएँ चकमक में नियमित रूप से आती रहती हैं और प्रकाशित भी होती हैं। बारह वर्षीय गुरमीत इनमें से ही एक था। पिछले दो साल में उसकी पाँच रचनाएँ मेरा पन्ना में प्रकाशित हुई हैं। अभी पिछले ही अंक यानी नवम्बर, 96 में गुरमीत की कविता 'कुआँ' प्रकाशित हुई थी।

गुरमीत की कविताओं के विषय बिलकुल अलग ही हैं। उनमें जो बात कही गई है, वह भी कुछ अनूठी ही है। गुरमीत के अन्दर निश्चित ही एक ऐसा कवि धीरे-धीरे बडा हो रहा था जो अपने आसपास की चीजों को ध्यान से देखता था और उनमें छिपे नए-नए अर्थ भी खोजता था। चकमक में प्रकाशित गुरमीत की ये कविताएँ हम पुन प्रकाशित कर रहे हैं। गुरमीत का न होना हम सबको हमेशा सालता रहेगा।

❑ चकमक

स्कूल

पहले दिन मैं गया स्कूल
बैठने को हमें मिले स्टूल
फिर कुछ दिन इसी तरह चला स्कूल
जब मैं गया दिन दसवें
लड़कों ने लड़कर मारे एक-दूसरे में बस्ते
एक-दूसरे में मारकर टूट गए स्टूल
मेरा बिगड़ गया स्कूल
जब गया दिन ग्यारहवें मिली टाट-पट्टी
तेरहवें दिन वह भी फाड़कर कर दी इकट्ठी
चौदहवें दिन मिले बैठने को सबको पत्थर
लड़कों ने फिर भी मारे एक दूसरे के पत्थर
फिर तो बंद हुआ स्कूल
ना थे पत्थर, न स्टूल।

(अक्टूबर, 1994)

आम

कितना ऊँचा पेड़ बड़ा
खेत में है यह खड़ा

बड़े-बड़े हैं इसके आम
फलों का राजा इसका नाम

रंग के हैं ये पीले-पीले
मीठे-मीठे और रसीले

इसका फूल बौर कहलाता
इसको है तोता भी खाता

(नवम्बर, 1995)

तोता

रंग -बिरंगे पंछी निराले।
काँव-काँव करते कौए काले।
कितना सुन्दर पंछी तोता।
कितना प्यारा मन को मोहता।
हरे पंख और चोंच लाल।
टैं-टैं करता करे कमाल।
मक्की और अमरूद है खाता।
बेचारे किसान को है सताता।

(जून, 1995)

पेड़

मैं पेड़ हूँ हरा भरा।
रहता हूँ सदा यहीं खड़ा।
तुम मुझे हो क्यों काटते?
धूप में हो तुम मेरी छाया में बैठते।
मैं तुम्हें हूँ फल खिलाता
तुम्हें धूप से हूँ बचाता।
मुझे कभी मत काटना
काटने वालों को डाँटना।

(जुलाई, 1994)

वो सुबह कभी तो आएगी...

एक बार फिर दिसम्बर का ठण्डी-ठण्डी, लम्बी-लम्बी रातों वाला महीना आ गया। पूरे बारह साल हो गए हैं भोपाल के लोगों को, ऐसी ही एक दिसम्बर की काली सर्द रात को जानलेवा गैस खाए हुए। बहुत सारे लोग उस हादसे में तुरन्त ही खत्म हो गए थे। बहुत से लोग गम्भीर बीमारियों के शिकार हो गए हैं। वो बच्चे जो उस समय छोटे-छोटे थे बीमारियों के शिकार हो गए हैं। और जो उस समय अपनी माँ के पेट में थे वह भी इस गैस से बच नहीं पाए। ये सभी बच्चे अब बड़े हो रहे हैं, लेकिन कई तरह की बीमारियों से परेशान हैं।

इन बच्चों में खाँसी, साँस फूलना, खाँसी में बलगम आना, छाती में दर्द, भूख न लगना जैसी कई तक़लीफें देखने में आती हैं। कई सारे संगठनों/समूहों/और स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने इनकी जाँच करके पाया है कि आम बच्चों की तुलना में इन बच्चों में यह शिकायतें कई-कई गुना ज़्यादा हैं। जैसे खाँसी को ही लो। आम तौर पर सौ में से हर दो बच्चों को खाँसी की परेशानी होती है - एक समय में। पर गैस पीड़ित इलाकों में यह देखा गया है कि सौ में से हर 93-94 बच्चों को यह शिकायत रहती है। चूँकि जो गैस रिसी थी उसमें दरअसल क्या-क्या था, उनके कैसे-कैसे असर होते हैं आदि जानकारी पहले से किसी को भी पता नहीं थी। इसलिए उसके कारण बीमार लोगों को दवाइयों से भी बहुत फायदा नहीं मिल पाता है।

ऐसे कुछ बच्चों से चकमक की दोस्त, ***तरनजीत बिरदी*** ने बातचीत की। तरनजीत एक चैरिटॅबॅल ट्रस्ट सम्भावना के साथ जुड़ी हैं जो इन इलाकों में स्वास्थ्य का काम कर रही है। इन बच्चों ने जो बताया वह तुम भी पढ़ो।

> “***जब*** गैस काण्ड हुआ था, मैं उस वक़्त बहुत छोटी थी। बचपन से ही मैं और मेरी बहनें बीमार रही हैं। मुझे हमेशा उबकाई, साँस फूलना, सिरदर्द और पेट में दर्द रहता था।”
>
> ❑ **शबीना, उन्नीस वर्ष, कांग्रेस नगर, बेरसिया रोड, भोपाल**

> “***जब*** गैस रिसी थी तो मैं अपनी माँ के पेट में थी - चार महीने की। बचपन से ही मुझे चक्कर आना, सिर दर्द, आँख में दर्द, बदन में दर्द, खाँसी की परेशानी थी।”
>
> ❑ **फरहान, ग्यारह वर्ष, कांग्रेस नगर, बेरसिया रोड, भोपाल.**

> “***जब*** गैस रिसी थी तब मैं अपने माँ के पेट में थी। अब मेरा पेट और सिर दुखता है और कब्ज़ भी रहती है। जब भी मैं देर तक पढ़ाई करने की कोशिश करती हूँ तो मेरी आँखों से पानी बहता है। मुझे स्कूल में बहुत मज़ा आता है। मैं छठवीं क्लास में पढ़ती हूँ और जब बड़ी हो जाऊँ तो डॉक्टर बनाना चाहूँगी।”
>
> ❑ **शाजमा, बारह वर्ष, कांग्रेस नगर, बेरसिया रोड, भोपाल.**

फोटो : तरन जीत बिन्द्री

“

जहाँ तक मुझे याद है, मुझे हमेशा ही खाँसी-सर्दी, बुखार और साँस फूलने की परेशानी रही है। मुझे क्रिकेट खेलने का बहुत शौक है पर मैं ज़्यादा देर तक खेल नहीं पाता हूँ। मैं बारहवीं तक पढ़ाई करके फिर काम करना चाहता हूँ। वैसे मैंने ट्रकों की बैटरी की एक दुकान पर काम सीखना शुरू कर दिया है। जब मैं बहुत बीमार हो जाता हूँ तो मेरा पेट दुखता है, मैं बेहोश हो जाता हूँ और फिर सो नहीं पाता हूँ। मेरी माँ मुझे अस्पताल ले जाती है और वहाँ वो लोग मुझे सुई लगाते हैं जिससे मुझे सिर्फ़ एक या दो दिन ही आराम मिलता है। अब तक मैंने इतनी दवाइयाँ खाई हैं कि मैं बस अब तंग आ गया हूँ। मैं बस उस दिन का इंतज़ार करता हूँ जबकि मुझे और दवा नहीं लेनी पड़ेगी।

”

❑ **नासिर, चौदह वर्ष, जयप्रकाश नगर, भोपाल**

“

मैं बहुत छोटी थी जब गैस रिसी थी। मेरी अम्मी बताती हैं कि वो मुझे जकड़कर जहाँगीराबाद भागी थीं। मेरी याददाश्त में मैंने अपना पहला कदम बीमारी में ही बढ़ाया था। और अब भी मैं उससे बच नहीं पाई हूँ। बीच में कुछ समय तक कुछ राहत थी पर अब फिर सब कुछ वापस आ गया है। मेरा गला और आँखें सूज जाती हैं, मेरा चेहरा सूजन की वजह से बड़ा रहता है, गले से अन्दर ही अन्दर खून बहता है। मेरी साँसें बुरी तरह से फूलने लगती हैं और मैं होश खो देती हूँ। मेरे पूरे बदन पर लाल-लाल धब्बे हैं। शुरू में ये धब्बे एक-एक रुपए के सिक्के जितने बड़े थे, पर अब तो ये छोटे हो गए हैं। मेरे दाहिने पाँव के कारण मुझे चलने में दिक्कत होती है और मेरे पैर देखो - ये छाले पड़े हुए हैं। कितना कुछ हुआ है हमें - हमारी ज़िन्दगी गैस के कारण हमेशा के लिए बदल गई है।

मेरे अब्बू इस दुर्घटना के कारण ख़त्म हो गए जब हम बहुत छोटे थे। मेरी माँ की मानसिक हालत बिगड़ गई। वह दरवाज़े पर बैठकर अब्बू का इन्तज़ार करती रहती थीं। हमसे कहतीं कि अब्बू घर आने वाले हैं उनके लिए चाय बना लें। वह उनके पैरों की आहट सुनतीं और चिल्लाकर कहतीं कि वो घर आ गए हैं। हम उनसे कहते कि अब्बू मर चुके हैं पर वो हमसे कहतीं कि ऐसी बातें नहीं कहते और अगर हम फिर ऐसा कहते तो वो हमें मार देतीं। हम उनसे कहते कि जब हम बड़े हो जाएँगे तो उनकी देखभाल करेंगे। डॉक्टर लोग हमसे कहते कि उन्हें खुश रखा करें पर उनकी हालत देखकर रोए बिना रह पाना बहुत मुश्किल होता था। यह सब कुछ महीनों तक चलता रहा। धीरे-धीरे किसी तरह अम्मी ने अपने आप को बटोरा। शायद इस एहसास ने उन्हें ठीक होने में मदद की कि उन्हें ही कुछ उपाय करने होंगे ताकि हम सब ज़िन्दा रह सकें।

मेरे अब्बू की पान और घड़ियों की एक दुकान थी। मेरी अम्मी को कुछ पता नहीं था। किसी ने उन्हें समझा-बुझाकर वह दुकान पाँच सौ रुपए में बिकवा दी। जब तक वह पैसा चला, हमें खाने को मिला। फिर मेरी अम्मी कितनी जगहें गईं, हर जान-पहचान वाले के पास, उधार माँगने! उन्हें दूसरों के झूठे बर्तन धोने जैसे जितने काम मिलते, वो करतीं। कई बार हम भूखे ही सो जाते। या पैसे नहीं होने के कारण हम कई-कई दिनों तक रोटी-चटनी पर गुज़ारा करते। तिस पर मेरी सेहत ने मेरी अम्मी से इतना खर्च करवाया है। मैं हमेशा से ही बीमार हूँ। मेरी एक जुड़वाँ बहन है जो बिल्कुल ठीक है। मेरी अम्मी चिल्ला पड़ती थीं कि वह मेरे इतने बीमार रहने और इतने पैसे खर्च करवाने से तंग आ गई हैं। वह मुझसे कहतीं कहीं जाकर मर जाने को। मेरे भाई भी ऐसा ही कहते। मुझसे यह सब बर्दाश्त नहीं होता था। मैं कुरआन शरीफ पढ़ती और अल्लाह मियाँ से मौत माँगती।

एक बार की बात है जब मैं बहुत बीमार थी। किसी ने मेरी अम्मी से कहा कि मुझे एक प्रायवेट डॉक्टर के पास ले जाएँ। वह डॉक्टर अच्छा माना जाता है। मुझे नर्सिंग होम ले जाया गया। डॉक्टर ने उन्हें बताया कि मैं मरने ही वाली हूँ और मेरे इलाज के लिए सिर्फ़ नर्सिंग होम के बिस्तर का खर्चा ही ढाई सौ रुपए हर दिन का आएगा, इलाज का अलग। मेरी माँ ने उन्हें बताया कि हमारे पास इतने पैसे नहीं हैं। तब उसने कहा कि मुझे घर ले जाएँ। पर वो नहीं मानी। हर रोज़ सुबह वह मुझे अस्पताल छोड़ जातीं। मैं वहीं पड़ी रहती जब तक कि दोपहर को वह न आतीं। मुझे नहीं मालूम कि वो कहाँ जातीं या कहाँ से पैसे लातीं। पर वह मेरे इलाज के लिए पैसे जुटा ही लेतीं। हमारे किसी रिश्तेदार ने मदद नहीं की। रिश्तेदार मुझसे कहते कि मैं फ़िक्र न करूँ। अगर ज़रूरत पड़ी तो वो मुझे ख़ून दे देंगे। पर किसी ने यह नहीं कहा कि वो मेरी देखभाल के लिए पैसे देंगे। फिर जब मुझे ख़ून की ज़रूरत हुई तो कोई आगे नहीं आया। मैं आपको बता नहीं सकती कि हमारे लिए वक़्त हमेशा कितना मुश्किल रहा है। मैं बस अल्लाह से दुआ माँगती हूँ कि ये परेशानियाँ चली जाएँ।

मेरे भाइयों ने एक पान की दुकान किराए से ले ली है। अब मैं आयुर्वेद की दवाएँ लेने लगी हूँ और उससे मुझे काफी आराम है। मेरे पाँव के छाले सूख रहे हैं, पसलियों का दर्द चला गया है, चेहरे की सूजन, सिर दर्द, बदन दर्द और गले से ख़ून बहना बन्द हो गया है। अब मुझे पहली बार ऐसा लगने लगा है कि मैं ठीक हो सकती हूँ। मैं यह जानती हूँ कि अभी हमें बहुत दूर जाना है। हम अभी भी बहुत कर्जे में हैं पर अब अम्मी मुझसे वह सब बातें नहीं कहतीं। मैं इतनी खुश रहती हूँ। मेरे भाई मुझे चिढ़ाते हैं कि कोई मुझसे शादी नहीं करेगा, क्योंकि मैं इतनी बीमार हूँ। पर मैं कहती हूँ कि क्या हुआ जो मेरी शादी नहीं होगी। मैं तो अब जीना चाहती हूँ!!!

❑ सलमा, सोलह वर्ष, आज़ाद मार्केट, भोपाल

फोटो : तरन जीत सिंह

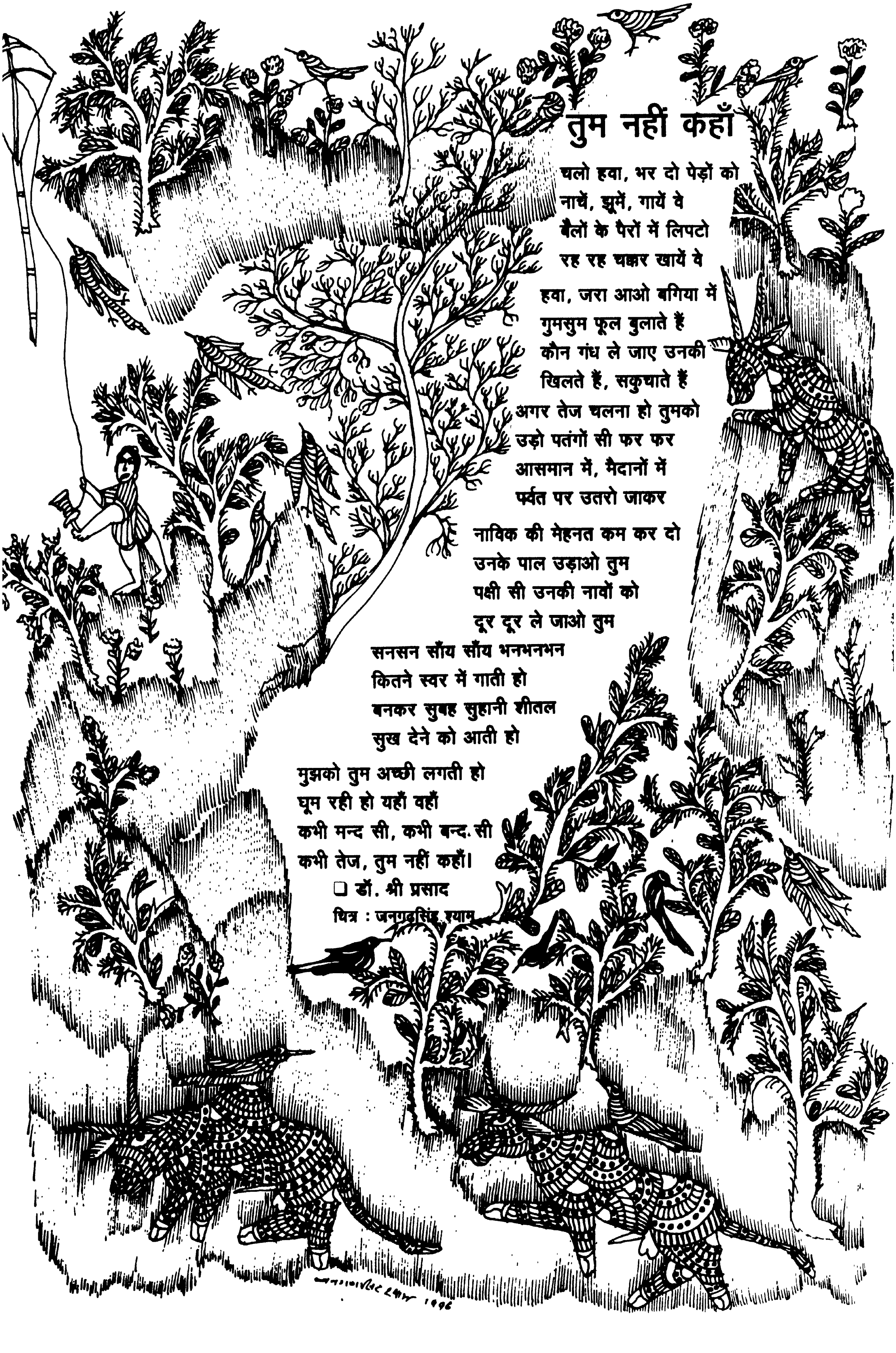

तुम नहीं कहाँ

चलो हवा, भर दो पेड़ों को
नाचें, झूमें, गायें वे
बैलों के पैरों में लिपटो
रह रह चक्कर खायें वे

हवा, जरा आओ बगिया में
गुमसुम फूल बुलाते हैं
कौन गंध ले जाए उनकी
खिलते हैं, सकुचाते हैं

अगर तेज चलना हो तुमको
उड़ो पतंगों सी फर फर
आसमान में, मैदानों में
पर्वत पर उतरो जाकर

नाविक की मेहनत कम कर दो
उनके पाल उड़ाओ तुम
पक्षी सी उनकी नावों को
दूर दूर ले जाओ तुम

सनसन सौंय सौंय भनभनभन
कितने स्वर में गाती हो
बनकर सुबह सुहानी शीतल
सुख देने को आती हो

मुझको तुम अच्छी लगती हो
घूम रही हो यहाँ वहाँ
कभी मन्द सी, कभी बन्द सी
कभी तेज, तुम नहीं कहाँ।

❑ डॉ. श्री प्रसाद

चित्र : जनगढ़सिंह श्याम

लाल चम्पा

उत्तरी और मध्य अमेरिका, दक्षिण पूर्व एशिया, चीन, और जापान में मैग्नोलिया नामक जाति के पेड़ मिलते हैं। इस पेड़ की कई प्रजातियाँ होती हैं जो दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में पाई जाती हैं। भारत में ही इसकी लगभग दस प्रजातियाँ मिलती हैं। यहाँ हम जिस प्रजाति के बारे में चर्चा कर रहे हैं उसे लाल चम्पा कहा जाता है। इसका नाम लाल चम्पा शायद इसलिए रखा गया होगा क्योंकि इसका फूल भी चम्पा की तरह सुन्दर होता है। लेकिन उससे इसका दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं है। यह पेड़ सजावट के लिए लगाया जाता है। लाल चम्पा जिस प्रजाति को कहा जाता है वह पेड़ भारत में हिमालय और मणिपुर में मिलता है। इसके अलावा नेपाल व भूटान में भी यह लगाया जाता है।

यह बहुत सुन्दर दिखाई देने वाला पेड़ है। इस पेड़ की पत्तियाँ अण्डाकार होती हैं। फूल बहुत सुन्दर गुलाबी रंग के होते हैं। ठण्ड में जब पेड़ पर से सारी पत्तियाँ झड़ जाती हैं तब फूल खिलने लगते हैं। ठण्ड के आख़िर से लेकर गर्मी के बीच तक के समय में फूल खिलते हैं। यह पेड़ शुरू में सीधा बढ़ता है और उम्र बढ़ने के साथ इसकी शाखाएँ फैलने लगती हैं।

पेड़ की लकड़ी पीलापन लिए सफ़ेद होती है। लकड़ी मुलायम और हल्की होती है। इस पेड़ की छाल गहरे रंग की लगभग काली होती है।

लाल चम्पा का पेड़ बहुत ऊँचाई वाली जगहों पर चाय के बागानों में लगाया जाता है। इसकी लकड़ी चाय की पैकिंग में काम आती है।

मसालों का सफ़र

❑ दुलदुल विश्वास

स्वाद के बारे में जीभ ने अक्टूबर के अंक में जो कुछ बताया वो तो तुमने पढ़ ही लिया होगा। खाने में स्वाद लाने का कितना हाथ मसालों का होता है और किसका क्या स्वाद है, यह तुम तय करते रहना। यहाँ हम इतिहास के कुछ पन्नों में झाँकने वाले हैं। क्या तुम मसालों के इतिहास, उनके सफ़र और व्यापार के बारे में जानना नहीं चाहोगे?

दुनिया भर में तेज़ चिरपिरे मसालों, जैसे लौंग, इलायची, बड़ी इलायची, काली मिर्च, दालचीनी आदि, की सबसे ज़्यादा पैदावार मलाया द्वीप समूह, श्रीलंका और भारत के दक्षिणी क्षेत्र में होती है। मलाया द्वीपों में इण्डोनेशिया के कुछ जज़ीरे जैसे जावा, सुमात्रा, मलक्का आदि; फिलिपाइन के जज़ीरे जैसे लूज़ोन, मिन्डानाओ आदि और ब्रूनेई, पापूआ और मलेशिया जैसे देश शामिल हैं। ये इलाके गर्म जलवायु और अधिक वर्षा वाले हैं। और मसालों के पेड़ ऐसी ही जगहों पर खूब उगते हैं।

बात उस समय की है जब दुनिया आज की तरह आपस में जुड़ी हुई नही थी। यातायात के इतने सारे और इतने विकसित साधन नहीं थे। हवाई जहाज़ों का तो नामोनिशान ही नहीं था। दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में रहने वाले लोग एक-दूसरे से विशाल समुन्दरों की वजह से कटे हुए थे। कई बार तो उन्हें पता भी नहीं होता था कि दुनिया के दूसरे हिस्से में ज़मीन कैसी है, उस पर कैसे लोग रहते हैं आदि। अजीब-अजीब मनगढ़न्त कहानियाँ दूर देशों के बारे में प्रचलित होती थीं। कुछ घुमन्तु लोग दूर देशों के सफ़र पर जाते थे। ये या तो राजाओं या सम्राटों के दूत होते या फिर खोजी किस्म के लोग। इस तरह के अभियानों से पूर्वी देशों से वापस यूरोप पहुँचे लोग अपनी नई खोजों के बारे में वर्णन करते हुए पूर्वी देशों में पाए जाने वाले सोने-चाँदी, बेशुमार दौलत और मसालों की बहुतायत की बातें ख़ूब करते थे।

दूसरी तरफ हमारे देश सहित दूसरे पूर्वी देशों तथा यूरोप के बीच के ज़मीनी रास्तों पर शुरू में इन्हीं देशवासियों का, और फिर बाद में अरबों का कब्ज़ा था। यहाँ पाई जाने वाली ख़ास चीज़ें - जैसे मसाले (लौंग, इलायची, दालचीनी, केसर और काली

बहुत पुराने ज़माने में पूर्वी देशों के स्थानीय लोग अपना व्यापार छोटी-छोटी पाल नौकाओं और खुश्की (सूखी जमीन) के मिले-जुले रास्ते से करते थे।

पूर्वी समुद्रों में सफ़र करना उस ज़माने में किसी भी जहाज़ी बेड़े के लिए खतरनाक ही होता था। यहाँ दिए चित्रों में हॉलैण्ड के एक ऐसे ही संकटग्रस्त बेड़े की कहानी बताई गई है। पहले चित्र में जलते हुए जहाज़ को दिखाया गया है। इस जहाज़ में बारूद लदा था और आग बुझाने की तमाम कोशिशों के बावजूद उसमें विस्फोट रोका नहीं जा सका।

जहाज़ में सवार जो लोग पहले ही छोटी-छोटी नौकाओं में बैठकर जहाज़ से दूर चले गए थे, उन्होंने जहाज़ में अंत में बचे रह गए कप्तान तथा एक अन्य नाविक को बचा लिया। दूसरे चित्र में यही दिखाया है। ये नौकाएँ बहुत दिनों तक समुद्र में बहती

मिर्च), सूती कपड़ा, छपा हुआ सूती कपड़ा, चीन के मशहूर रेशम के कपड़े आदि के व्यापार पर भी पूरी तरह से अरबों की ही पकड़ मज़बूत होती जा रही थी। इनका व्यापार भारत और दूसरी पूर्वी देशों से लेकर भूमध्य सागर तक फैला हुआ था। अपने माल की कीमत बढ़ाने के लिए अरबी व्यापारी यहाँ के देशों के बारे में, खासकर मसाला उगाने वाली जगहों के बारे में बना-बनाकर डरावनी कहानियाँ सुनाते थे। अक्सर इन कहानियों के प्रभाव में लोग इन मसालों के लिए मुँहमाँगी क़ीमत दे देते थे। एक जगह प्लीनी नाम के एक प्रसिद्ध दार्शनिक इतालवी ने लिखा है कि, "ये सब कहानियाँ ये लोग अपने माल की क़ीमत को बढ़ाने के लिए ईजाद करते हैं।"

भूमध्य सागर से लेकर यूरोप तक का व्यापार इतालवी व्यापारियों के कब्ज़े में था। ये भी मसालों और पूर्वी देशों से आने वाली बाकी सामग्री के दाम खूब बढ़ा-चढ़ाकर इन्हें यूरोपीय देशों तक पहुँचाते थे। एक लम्बे समय तक इस व्यापार का प्रमुख केन्द्र रोम में रहा। फिर छठी शताब्दी के बाद से लेकर लगभग दसवीं-बारहवीं सदी तक वेनिस शहर इसका मुख्य बिन्दु बना रहा।

पर क्या तुम्हारे मन में यह सवाल नहीं उठता कि ये यूरोपीय इस तरह से मसालों के पीछे मरे क्यों जा रहे थे? इनके देशों में भी खाने लायक चीज़ें होती होंगी। बात दरअसल यह है कि उस ज़माने में खाने में गोश्त का प्रचलन बहुत था। खासकर यूरोप

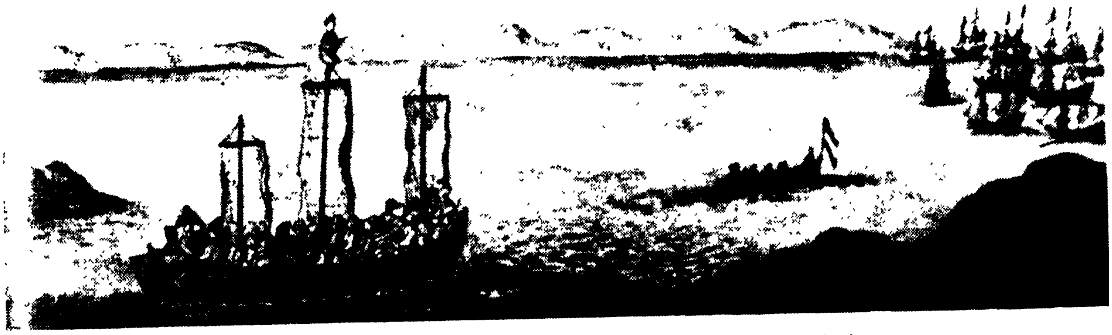

रहीं। नाव में सवार लोग समुद्र से उछलती मछलियों और बारिश के पानी पर अपना गुजारा करते थे।

धीरे-धीरे बहती हुई ये नौकाएँ सुमात्रा द्वीप के किनारे पहुँची। यहाँ उन्हें स्थानीय लोगों के गुस्से और दुत्कार का सामना करना पड़ा। बाद में हॉलैण्ड के ही एक अन्य जहाज़ी बेड़े ने इन बचे खुचे लोगों को अपने जहाज़ पर ले लिया।

में। गर्मी के मौसम में तो वहाँ गोश्त आसानी से मिल जाता था। क्योंकि चारों ओर हरियाली होती और जानवरों को आराम से चारा मिल जाता था। बड़े-बड़े घास के मैदानों पर गाय-भैंस-भेड़-बकरी आदि पलते रहते और लोग इन्हें जब मर्ज़ी तब काटकर खा सकते थे। परन्तु जाड़ों में वहाँ बड़ी कड़ाके की ठण्ड पड़ती है। बर्फ़ भी गिरती है और सारे मैदान बर्फ़ से ढक जाते हैं। उस ज़माने में, ऐसे में जानवर चारे की कमी से मरने लगते थे। और जानवर मर जाएँ तो लोग क्या खाएँ? लोगों को पूरे जाड़े के लिए अपने भोजन का इन्तज़ाम शरदकाल में ही जानवरों को मारकर करना पड़ता था। इस तरह गोश्त के बड़े-बड़े भण्डार बनाए जाते जो अगली गर्मियों में बर्फ़ के पिघलने तक काम आ सकें। परन्तु इन भण्डारों का गोश्त कई बार रखे-रखे ख़राब हो जाता था। और कई बार कोई और उपाय न होने पर लोगों को खराब, सड़ा हुआ गोश्त खाना पड़ता था। पर पूर्वी इलाके से जाने वाले मसालों में जो चीज़ मात्रा में सबसे ज़्यादा होती थी, वही काली मिर्च गोश्त को लम्बे समय तक खराब होने से बचाने के गुण की भी धनी थी। कई बार लौंग, इलायची, केसर आदि का उपयोग थोड़े-से बसा गए गोश्त का स्वाद, रंग और गंध खाने लायक बनाने में भी किया जाता था। तो खाने की चीज़ों की गुणवत्ता में ऐसा ज़मीन-आसमान का फर्क लाने वाले ये मसाले क्यों न लोकप्रिय होते।

शुरुआती खोजियों के सफ़र

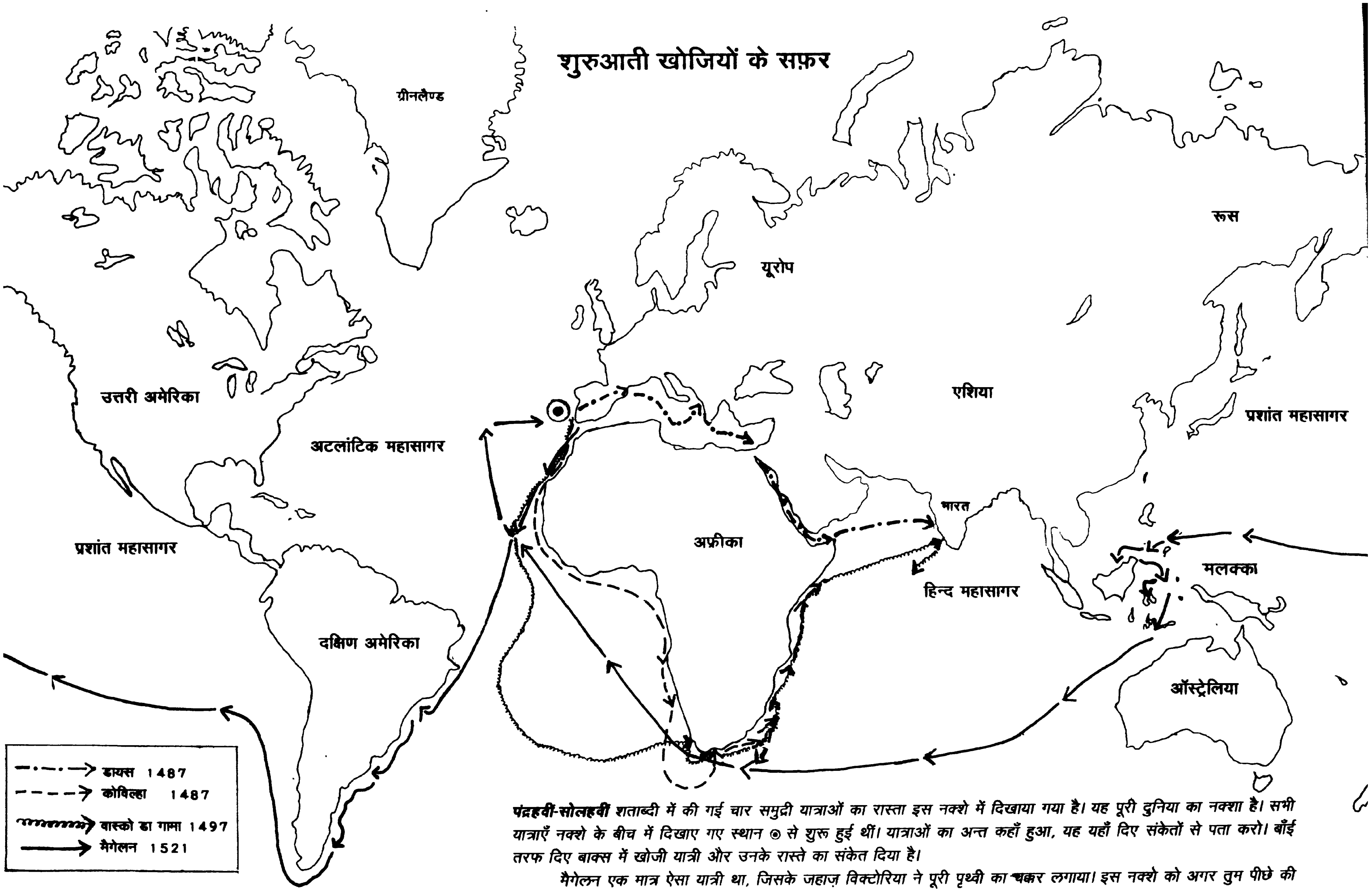

पंद्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी में की गई चार समुद्री यात्राओं का रास्ता इस नक्शे में दिखाया गया है। यह पूरी दुनिया का नक्शा है। सभी यात्राएँ नक्शे के बीच में दिखाए गए स्थान ⊙ से शुरू हुई थीं। यात्राओं का अन्त कहाँ हुआ, यह यहाँ दिए संकेतों से पता करो। बाँई तरफ दिए बाक्स में खोजी यात्री और उनके रास्ते का संकेत दिया है।

मैगेलन एक मात्र ऐसा यात्री था, जिसके जहाज़ विक्टोरिया ने पूरी पृथ्वी का चक्कर लगाया। इस नक्शे को अगर तुम पीछे की तरफ गोलाई में मोड़कर जोड़ लो तो यह बात आसानी से समझ सकते हो।

लेकिन उस ज़माने में ये बहुत कीमती होते थे। पहली-दूसरी सदी के बाद के दस्तावेज़ों से ऐसा लगता है कि यूरोपीय इन मसालों के बदले में अपना सोना-चाँदी और दूसरी कीमती धातु भी दे देते थे। इसलिए इन मसालों तक सिर्फ यूरोपीय अमीरों की ही पहुँच होती थी। गरीब तबकों के लोगों को वहाँ पाए जाने वाले लहसुन, सौंफ, धनिया, तेजपान और ऐसी ही कुछ और चीज़ों से काम चलाना पड़ता था। लोग दवाओं के रूप में भी इन मसालों का उपयोग करते थे। लगभग सभी मसालों के बारे में आम धारणा थी कि वे वायु (गैस) की तकलीफों से बचाव करते हैं।

धीरे-धीरे यूरोप के लोग इन पूर्वी देशों के व्यापार मार्गों पर अरबों और इतालवियों के एकाधिकार से तंग आने लगे। वैसे भी इनका व्यापार ज़मीनी रास्तों पर निर्भर था जो अपने आप में बहुत महँगा पड़ता था। एक इतिहासकार ने उस समय इस व्यापार मार्ग से सफर करते हुए काली मिर्च की बढ़ती कीमतों के बारे में यह लिखा है, - "शुरू में जिन देशों में यह पैदा होती थी वहाँ एक किलो काली मिर्च की कीमत लगभग एक या दो ग्राम चाँदी होती थी। वहाँ से चलकर अरब पार करके अल सिकन्दरिया (मिस्र) पहुँचने पर उसकी कीमत बढ़कर 10 से 14 ग्राम चाँदी प्रति किलो हो जाती थी। फिर भूमध्य सागर पार करके वेनिस पहुँचने पर यह 14 से 18 ग्राम चाँदी में एक किलो मिलती थी। और आख़िरकार यूरोप पहुँचकर इसकी कीमत हो जाती थी 20 से 30 ग्राम चाँदी प्रति किलो।

बढ़ती महँगाई से परेशान यूरोपियों को पन्द्रहवीं सदी के अन्त-अन्त में लगने लगा कि पूर्वी देशों की ओर जाने वाले और रास्ते ढूँढे जाने चाहिए। ऐसी शुरुआती कोशिशें पन्द्रहवीं सदी के अन्त में स्पेन, पुर्तगाल, इंग्लैण्ड, हॉलैण्ड जैसे देशों की बदौलत हुईं। पहले लोग समुन्दर में पूर्व की ओर सफर करके भारत और दूसरे पूर्वी देशों तक पहुँचने की कोशिश करते रहे। बहुत-सी ऐसी शुरुआती यात्राएँ अफ्रीका के दक्षिणी छोर तक पहुँचकर ही या तो समुद्री तूफानों के कारण वापस लौट गईं या फिर नाविकों की गिरती सेहत के कारण। इसी समय पुर्तगाल के राजा ने 'कोविल्हा' नाम के एक नाविक को ज़मीन और समुद्र के मिले-जुले रास्ते से भारत की खोज में भेजा। इसी साल उसने 'डायस' नामक एक और नाविक को समुद्री रास्ते से भेजा। डायस तो अफ्रीका का दक्षिणी तट पार करने के बाद हिन्द महासागर की शुरुआत से वापस पलट गया। कहते हैं उसकी बहुत इच्छा थी आगे जाने की पर उसके साथियों ने दबाव डालकर जहाज़ वापस मोड़ लिए थे। पर 'कोविल्हा' काहिरा (मिस्र) और मक्का (सउदी अरब) होते हुए अरब सागर पार करके भारत पहुँच गया।

वास्को डी गामा

इसके दस साल बाद पुर्तगाल के झण्डे तले ही 'वास्को डा गामा' भारत की खोज में निकला। और एक साल के सफ़र के बाद दक्षिण भारत के पश्चिमी तट के कालीकट बन्दरगाह पर पहुँचा। वास्को डा गामा के भी बीसेक साल बाद मैगेलन नामक एक व्यक्ति ने स्पेन के झण्डे तले पश्चिम की ओर सफ़र करके मसालों के द्वीपों तक पहुँचने की कोशिश की। बहुत ही लम्बे और कठिन सफर से भरे लगभग डेढ़ साल बाद इस बेड़े में से बचे मात्र दो जहाज़ मसालों के द्वीपों तक पहुँचे। पर उसके कुछ ही दिनों बाद एक द्वीप 'सेबू' के राजा की लड़ाई में मदद करते हुए मैगेलन खुद मारा गया। फिर भी यूरोप से मसालों के द्वीप या मलक्का द्वीप समूह तक समुद्री रास्ते से पहुँचने वाले यही पहले लोग थे। बाद में फिर पश्चिम की ओर बढ़ते हुए इनमें से एक

इब्ने बतूता की कलम से ..

शेख फ़क़ीह अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद इब्ने अब्दुल्लाह इब्ने मुहम्मद इब्ने इबराहीम जो इब्ने बतूता के नाम से प्रसिद्ध है, तानजीर का रहने वाला था। उसे पूर्व के देशों में लोग शम्सुद्दीन भी कहते थे। वह अरब तथा अरबी बोलने वाले मुसलमान यात्रियों की विस्तृत श्रृंखला की एक कड़ी था जो मध्यकाल में समय-समय पर भारतवर्ष आते रहे। इन यात्रियों ने भारत का ज़िक्र अपनी यात्राओं के विवरणों में और भूगोल एवं इतिहास की पुस्तकों में किया है। इब्ने बतूता चौदहवीं शताब्दी का बहुत महत्वपूर्ण यात्री था। उसने 2 रजब 725 हिजरी (14 जून 1325 ईसवी) को तानजीर से मक्के के लिए प्रस्थान किया। वहाँ (मक्का) से 1 मुहर्रम 734 हिजरी (12 सितम्बर 1333) को सिन्ध पहुँचा। 13 रजब 734 हिजरी (20 मार्च 1334) को देहली पहुँचा। सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक ने, जो उस वक्त यहाँ का बादशाह था, उसे 17 सफ़र 743 हिजरी (22 जुलाई 1342) को अपनी ओर से राजदूत बनाकर चीन भेजा।

अनेक स्थानों की यात्रा करते-करते 6 नवम्बर 1349 ईसवी को वह फ़ेज़ पहुँचा और वहाँ से तानजीर गया। वहाँ से वह फिर यात्रा पर निकल पड़ा। इब्ने बतूता ने भारत की भौगोलिक स्थिति, यहाँ की जलवायु, फल-फूल, वनस्पति, पशुओं तथा वेशभूषा और रहन-सहन, कृषि एवं व्यापार के विषय में विस्तार से लिखा है।

इब्ने बतूता ने अपने यात्रा विवरण में काली मिर्चों का वर्णन इस तरह किया है -

"काली मिर्चों की झाड़ियाँ अंगूर की बेल के समान होती हैं। वह नारियल के समीप बोई जाती हैं और उनकी बेलें नारियल के वृक्ष पर अंगूर की बेलों के समान चढ़ जाती हैं। मिर्च की बेलों में अंगूर की बेलों के समान तुन्तु नहीं होते। उसके पत्ते हींग के पत्तों के समान होते हैं। कुछ पत्ते अलीक (एक प्रकार की घास जिसे खाकर घोड़े मोटे हो जाते हैं) के पत्तों के समान होते हैं। उसका फल छोटे-छोटे गुच्छों में लगता है और जब वे हरे होते हैं तो अबू किलीजा (एक प्रकार की खजूर) के समान होते हैं। ख़रीफ में उन्हें तोड़कर नरकट की चटाई पर उसी प्रकार सुखा देते हैं जिस प्रकार किशमिश बनाते समय अंगूर सुखाए जाते हैं। उनको उलटते-पलटते रहते हैं। जब वे सूख जाते हैं और उनका रंग काला हो जाता है तो उन्हें व्यापारियों के हाथ बेच दिया जाता है। हमारे देश में लोगों का यह विचार है कि उनको आग में भूनते हैं इसी कारण उनमें करारापन आ जाता है। किन्तु यह बात ठीक नहीं है। यह करारापन धूप से पैदा होता है। हमने कालकूत (कालीकट) नगर में इसको उसी प्रकार नाप-नापकर भरते देखा है जिस प्रकार हमारे देश में ज्वार भरते हैं।"

(तुग़लक़ कालीन भारत, भाग-1 से साभार
सं. सैयद अतहर अब्बास रिज़वी)

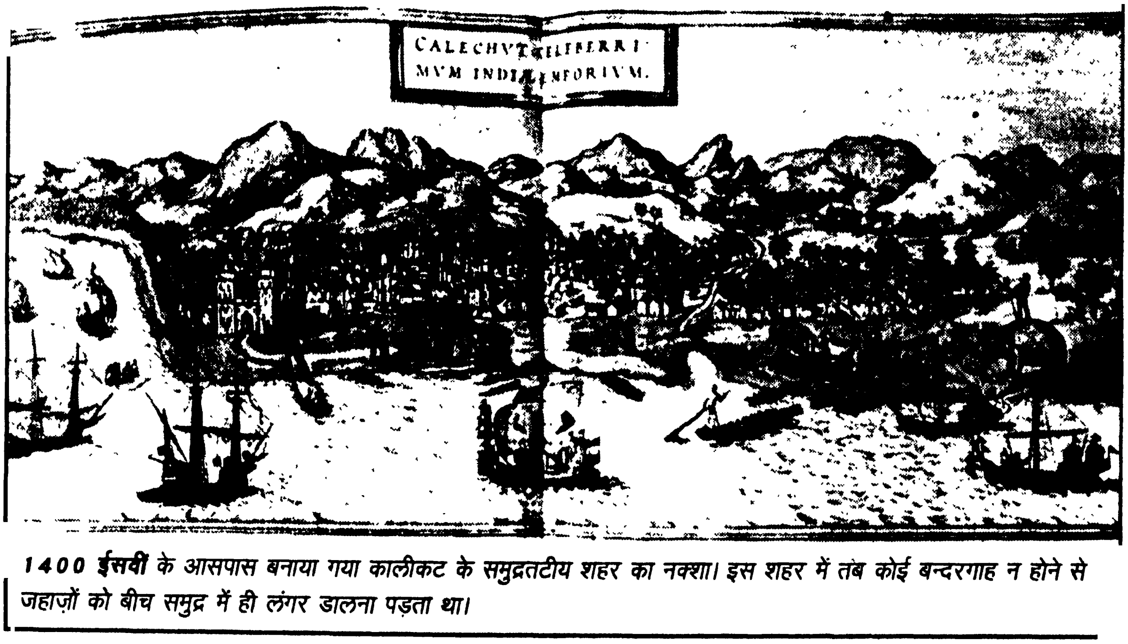

1400 ईसवी के आसपास बनाया गया कालीकट के समुद्रतटीय शहर का नक्शा। इस शहर में तब कोई बन्दरगाह न होने से जहाज़ों को बीच समुद्र में ही लंगर डालना पड़ता था।

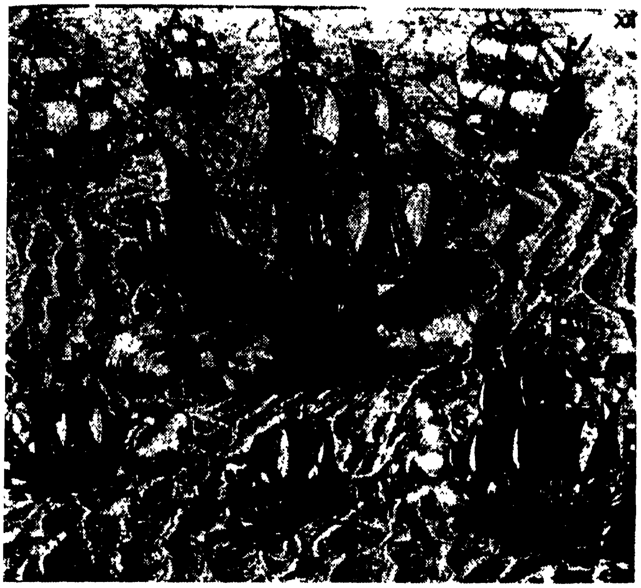

समुद्र में सफर करते एक पुर्तगाली जहाज़ को घेरकर आक्रमण करने की तैयारी करते हॉलैण्ड के कई जहाज़।

में फिर पश्चिम की ओर बढ़ते हुए इनमें से एक जहाज़ पुर्तगालियों के हाथ लग गया और उसमें सवार सारे लोगों को बन्दी बना लिया गया। दूसरा जहाज़ धीरे-धीरे बहता हुआ अफ्रीका के दक्षिणी छोर का चक्कर काटकर वापस स्पेन पहुँच गया। इस तरह से पूरी पृथ्वी का पहला गोल चक्कर लगाने का श्रेय भी इसी जहाज़ 'विक्टोरिया' को जाता है।

इन सारे नाविकों का समुद्री सफ़र उस ज़माने में काफ़ी भयावह होता होगा। एक तो जानकारी ही नहीं होती थी कि आगे कौन-सा देश है। जहाँ पहुँचते थे उसके बारे में भी पता नहीं होता था। और फिर जहाज़ भी पाल वाले होते थे। हवा खींचकर जहाँ ले जाए, वहीं चल पड़ो। फिर भी पूर्वी देशों की धन-दौलत, मसालों की बहुतायत यूरोपीय लोगों को इन कठिनाइयों के बावजूद यहाँ तक खींच लाई।

पुर्तगालियों के भारत आने के बाद मसाले का व्यापार बहुत सालों तक खूब ज़ोर-शोर से चला। मसालों के समुद्री व्यापार पर पुर्तगालियों ने अपना एकाधिकार जमा लिया। यूरोप में अब यह कोई विलासिता की चीज़ नहीं रही। तब से लेकर सत्रहवीं सदी के बीच तक बहुत बड़ी मात्रा में मसाले पूर्वी देशों से यूरोप पहुँचते रहे। इस बीच डच और फ्रांसिसी लोग भी भारत पहुँचे थे। समुद्री रास्ते से व्यापार करने वाले ये सब देश अब प्रतिद्वन्दी की तरह काम करने लगे।

यहाँ से बहुत दूर दक्षिण अमरीका की अमेजन नदी के किनारे बसे एक गाँव की बात है। इस गाँव में सब घरों में एक 'काली मिर्च' की हांडी पाई जाती है। यहाँ पर गरमी के कारण गोश्त और खाने की चीज़ें बहुत जल्दी खराब हो जाती हैं। इसलिए यहाँ रहने वाले लोगों के घरों में हमेशा एक हांडी चूल्हे के ऊपर टँगी रहती है। इसमें खूब सारी काली मिर्च रहती है, इस वजह से उसे काली मिर्च की हांडी कहा जाता है। जब भी शिकार से गोश्त मिलता है तो उसे इस हांडी में डाल दिया जाता है। काली मिर्च के कारण वह काफी समय तक बिना खराब हुए रह जाता है। हांडी में मनियोक (एक पौधा) की जड़ का थोडा आटा भी डाला जाता है ताकि शोरबा (रस) गाढ़ा हो जाए।

फिर क्या हुआ? सवाल वाजिब है। इतिहास के पन्ने पलटने से ऐसा लगता है कि 1715 से 1732 के बीच मसालों का व्यापार अपनी अधिकतम सीमा तक पहुँच गया था। लेकिन इसके बाद काली मिर्च का दर्ज़ा मसालों के व्यापार में काफी घट गया। अठारहवीं सदी के अन्त तक आते - आते व्यापार में काली मिर्च का दर्ज़ा चौथा ही रह गया था।

मसालों, खासकर काली मिर्च की माँग में इस आकस्मिक गिरावट का एक कारण शायद यह था कि शुरू में ये अमीरों की ही पहुँच की, विलासिता की चीज़ थी। बाद में इनकी जगह विलासिता की दूसरी चीज़ें जैसे चाय, क़ॉफी, चॉकलेट, शराब और तम्बाकू आदि ने ले ली। दूसरी ओर तब तक पश्चिम के भोजन में भी बहुत-सी नई सब्ज़ियाँ प्रचलित हो चुकी थीं। शायद कुछ बात यह भी रही होगी कि जब समुद्री व्यापार के कारण एक ख़ास विलासिता की चीज़ बहुत आम हो गई, तो उसकी कीमत और माँग भी घट गई। 'घर की मुर्गी दाल बराबर' वाला हिसाब हो गया!

मसालों के सफ़र में हम काफ़ी पीछे तक घूम आए। इनका सफ़र अब भी जारी है। अन्य चीज़ों की तरह लम्बी-लम्बी यात्राएँ करके मसाले पता नहीं कहाँ-कहाँ, किस-किस का स्वाद बढ़ाते हैं। ❑❑

इस लेख में आए चित्र द मार्शल कैवेन्डिश इलस्ट्रेटेड एन्सायक्लोपीडिया ऑफ डिस्कवरी एण्ड एक्सप्लोरेशन, ग्रेट एजेस ऑफ मैन सीरीज़ की एज ऑफ एक्सप्लोरेशन, द स्ट्रक्चर ऑफ एवरीडे लाइफ और वील्स ऑफ ट्रेड एण्ड कॉमर्स से साभार।

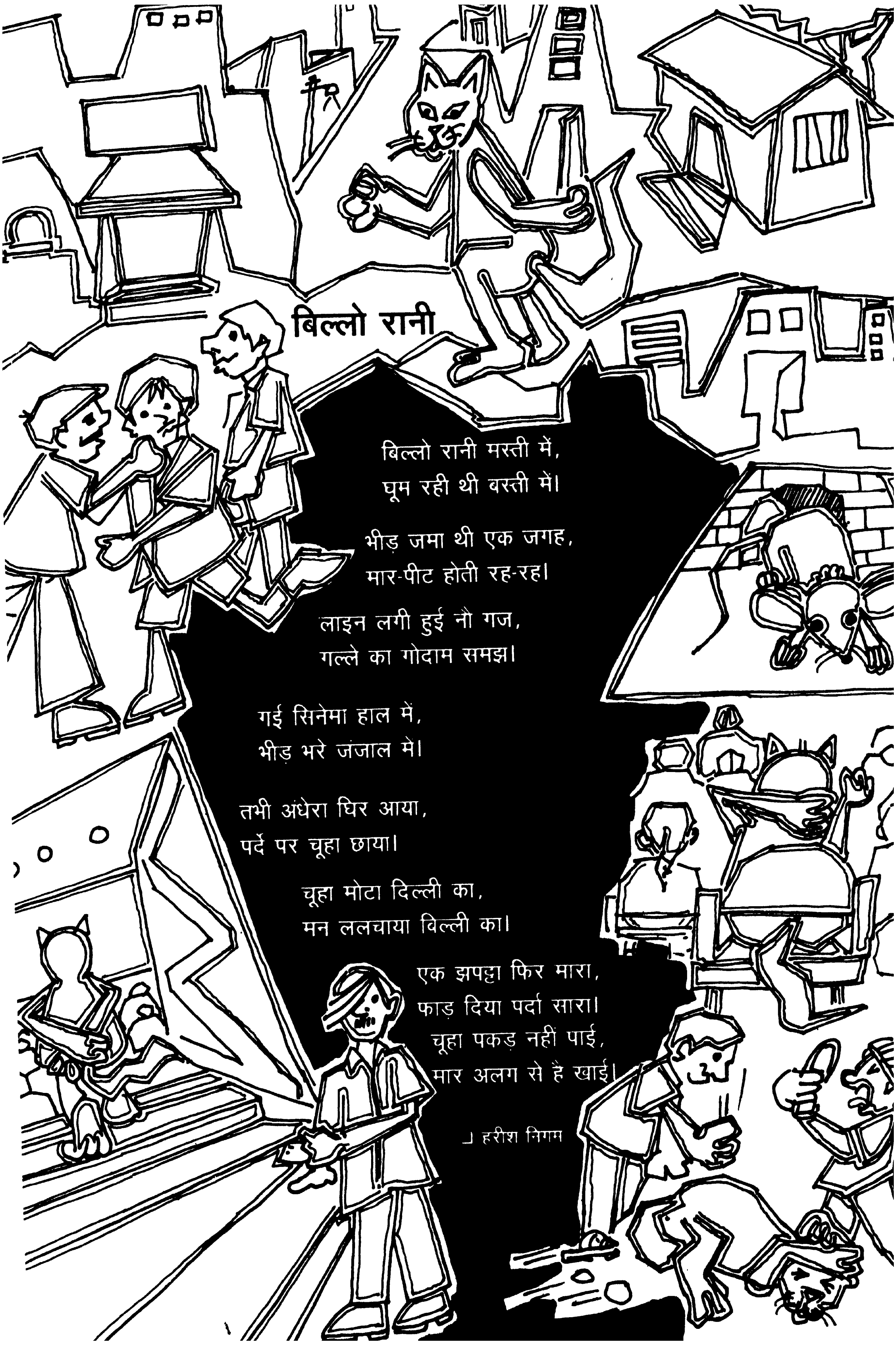

बिल्लो रानी

बिल्लो रानी मस्ती में,
घूम रही थी बस्ती में।

भीड़ जमा थी एक जगह,
मार-पीट होती रह-रह।

लाइन लगी हुई नौ गज,
गल्ले का गोदाम समझ।

गई सिनेमा हाल में,
भीड़ भरे जंजाल में।

तभी अंधेरा घिर आया,
पर्दे पर चूहा छाया।

चूहा मोटा दिल्ली का,
मन ललचाया बिल्ली का।

एक झपट्टा फिर मारा,
फाड़ दिया पर्दा सारा।
चूहा पकड़ नहीं पाई,
मार अलग से है खाई।

⌋ हरीश निगम

कहानी

पूसी की वापसी

❑ गिरिजा कुलश्रेष्ठ

"म् ...आ ऽऽ ऊँ! मा ऽऽ ऊ।"

पूसी ने कुछ बेचैन होकर अपने बच्चे को पुकारा जो अभी डेढ़ माह का था और माँ के पास रहने की बजाय बाहर मस्ती करने में ज़्यादा रुचि लेने लगा था। पूसी अकेली बैठी ऊबने लगी थी और काफ़ी देर से उसे बुला रही थी। माँ बनने के बाद उसे किसी पर भरोसा करना बेमानी लगने लगा था। ऐसे में ज़्यादा देर तक अपने बच्चे को दूर कैसे छोड़ सकती थी?

यों पूसी के मन का सन्देह बेबुनियाद भी नहीं था। बच्चे के जन्म के बाद ही घर के लोगों ने उसके व बच्चे के बीच दखल देना शुरू कर दिया। कभी माँ आकर देखे तो कभी गुल्लू और मिनी उसे छूकर तंग करें। यही नहीं टी.वी. के किसी विज्ञापन की तरह मुहल्ले भर में बच्चे-बच्चे को ख़बर हो गई कि पूसी ने बेहद ख़ूबसूरत और प्यारे से बच्चे को जन्म दिया है, जो रेशम की तरह मुलायम है, जिसकी आँखें माँ की तरह पीली नहीं, बल्कि नीले कंचे जैसी ख़ूबसूरत हैं।

फिर क्या, चींटियों की कतार की तरह बच्चे गुल्लू के घर आने-जाने लगे और बच्चे को उठा-उठाकर देखने लगे। कई नासमझ बच्चे तो उसके नन्हे से मुँह में रोटी या बिस्कुट ही देने लगे, जबकि वह सिर्फ़ दूध पी सकता था वह भी माँ का। पूसी ने किसी तरह सब बर्दाश्त किया क्योंकि उसका ख़ुद का बचपन भी इसी घर में बड़े प्यार और हिफ़ाज़त में बीता था।

पूसी अपने इकलौते बेटे को बड़ी लय और मिठास के साथ पुकारती, स्वर को ख़ूब लम्बा खींचकर, "म् ... आ ऽऽऽ ऊ ऽऽ।"

इस प्यार भरे मधुर सम्बोधन से प्रभावित होकर घर के सभी लोग बच्चे को 'माऊ' कहकर बुलाने लगे। माऊ भी अपने नाम को बख़ूबी पहचान लेता और सुनकर छलाँगे भरने लगता। वह घर के

सभी लोगों के साथ ख़ूब घुल-मिल गया। यहाँ तक कि रात में माँ को छोड़कर गुल्लू या गुल्लू की माँ की रज़ाई में घुराकर आराम से सो जाता। पूसी के मन में सन्देह सिर उठाने लगा, 'ज़रूर ये लोग बच्चे को छीनने की साजिश कर रहे हैं।'

सुबह-शाम पूसी और माऊ के खेलने का समय था। दोनों ख़ूब दौड़ते, छलाँग लगाते, गुर्राते, लड़ने-झगड़ने का नाटक करते। पूसी बच्चे को शिकार पर हमला करने और दुश्मन से बचाव करने के दाँव-पेंच सिखाती। पहले वह माऊ को झपटकर दबा लेती, फिर पेट और गर्दन में दाँत गड़ाने का अभिनय करती। माऊ हल्के से चीखता। छूटने की कोशिश करता, तभी मिनी चिल्लाकर उसका ध्यान बंटा देती, "अरे-अरे पूसी तो बच्चे को मार ही डालेगी। पता है बिल्ली को भूख लगती है तो अपने बच्चे को ही खा लेती है।"

माऊ इस शोर का लाभ उठाकर छूट जाता। "बेवकूफ़ लड़की" - पूसी मिनी की बातों पर ज़्यादा ध्यान न देकर निष्क्रिय लेट जाती और पूँछ के सिरे को हिला-हिलाकर माऊ को संकेत देती। माऊ पहले तो बुद्धू बना देखता रहता, फिर अचानक हिलती हुई पूँछ पर झपटता। कभी दूर जाकर तिरछा चलता हुआ, पूँछ फुलाकर अकड़कर आता। पीठ बीच में से ऊँट की तरह उठ जाती। फिर दबे पाँव आकर माँ के ऊपर हमला करता। पूसी बेटे के कौशल पर निहाल हो जाती।

लेकिन उसकी खुशी अधूरी ही ख़त्म हो जाती, जब गुल्लू आँगन में प्लास्टिक का बिच्छू या छिपकली डालकर माऊ को बुला लेता। माऊ माँ को छोड़कर नकली बिच्छू पर अपने नए-नए सीखे दाँव-पेंचों को आज़माता। उसे चीर-फाड़ने की पुरज़ोर कोशिश करता।

"इतना बेवकूफ़ होना भी अच्छा नहीं है।" पूसी कुढ़ने लगती।

"बेवकूफ़ कैसे कह सकती हो माँ?" माऊ भोलेपन से माँ की तरफ देखता, "मैं तो यूँ ही खेल रहा था। गुल्लू मेरा दोस्त है ना?"

"हूँ।" पूसी गुर्राती, "दोस्त दुश्मन की पहचान है ही कितनी तुझे? एक दोस्त टॉमी है। .... दोस्ती में ही किसी दिन कचूमर बना देगा तेरा। मेरे मना करने पर भी आगे-पीछे फिरता है उसके। जब देखो उसके खाने में शामिल हो जाता है। हमें किसी पर भी इतना भरोसा नहीं करना चाहिए।"

माऊ चुपचाप माँ की नसीहतें सुनता। दुश्मन क्या होता है शायद उसे पता ही न था। वह तो उस छोटी चुहिया को भी दोस्त मानकर खिलाने लगता था, जिसे पकड़ने के लिए माँ ने दौड़ाया था। वह इतना ज़रूर जानता था कि घर में सभी लोग उसे बहुत प्यार करते हैं तथा उन पर भरोसा करना ख़तरनाक नहीं हो सकता।

इसलिए वह बेख़ौफ़ खुलकर शरारतें किया करता। कभी मिनी की फ्रॉक खींचकर उसे जगा देता या डरा देता। कभी गुल्लू की नानी की सूखती साड़ी में उलझ-उलझकर गिरा लेता। कभी उनके पैरों में अड़कर उन्हें चलने से रोकता तो कभी गुल्लू को पंजे मार-मारकर छेड़ता। माऊ ख़ूब जानने लगा था कि पंजा मारते समय नाखूनों का उपयोग केवल गुस्से में या फिर दुश्मन पर किया जाता है। वह यह भी जानने लगा कि सभी लोग पंजा मारने पर पीड़ा से नहीं बल्कि चौंककर या डरकर चीखते हैं - "हट .. बदमाश कहीं के ...," यह सुनकर माऊ को लगता कि वह काफ़ी बड़ा और समझदार हो गया है, इसलिए खुश होकर उछलता।

यही नहीं हर नई चीज़ का निरीक्षण करना भी माऊ को ज़रूरी लगने लगा था। हर चीज़ को सूँघता देखता, फिर उछलकर भागता। एक दिन ख़ाली घड़े में ऐसे ही झाँकने लगा कि आख़िर यह अन्धेरा कुआँ-सा है क्या बला? बस फिसलकर जनाब घड़े में गिर पड़े। अब लगे चिल्लाने। गुल्लू ने निकाला तो फिर शैतानियाँ शुरू ...।

पूसी यह सब देखकर परेशान होती। उसे विश्वास हो चला था कि यहाँ रहकर उसका बच्चा न केवल उससे दूर हो रहा है बल्कि बुद्धू-सा भी बनता जा रहा है। जबकि वह उसे एक चालाक और कामयाब बिल्ला बनाना चाहती थी। सब कुछ सोचकर उसने तय किया कि यहाँ से माऊ को ले जाना ही बेहतर होगा।

पूसी के लिए घर से बाहर जाने के दो रास्ते थे। एक दरवाज़े से गली में होकर और दूसरा नसैनी द्वारा छत पर जाकर लगी दूसरी छतों से होकर। गली से जाना तो ख़तरनाक हो सकता था। लेकिन माऊ ने नसैनी पर चढ़ना नहीं सीखा था। यों वह मुँह में दबाकर भी ले जा सकती थी। पर अपने लाड़ले बेटे के साथ वह कोई ज़बरदस्ती नहीं करना चाहती थी। इसलिए उसने माऊ को चढ़ना सिखाया।

पहले एक-दो सीढ़ियाँ ख़ुद चढ़ती फिर माऊ को चढ़ने के लिए प्रेरित करती। माऊ पहले दो-एक बार फिसला, गिरा पर अन्त में छत पर पहुँच ही गया।

"अब हम एक अच्छी और सुरक्षित जगह पर चलते हैं जहाँ ढेर-सारा मक्खन और मलाई वाला दूध मिल सकता है।" पूसी बोली।

अच्छा तो माँ ने इसलिए चढ़ना सिखाया है - माऊ ताड़ गया और माँ से बोला, "हमारे लिए तो यही जगह बेहतर है माँ।"

"लेकिन मैं ऐसा नहीं मानती। यहाँ हमारे लिए अनेक ख़तरे हैं, हममें से किसी का भी रहना ठीक नहीं है।" पूसी ने समझाया।

"मैं कहीं नहीं जाऊँगा।" माऊ गुस्से से बोला, "तुमने मुझे बहलाकर चढ़ाया है। पर मैं उतर भी सकता हूँ आसानी से।" यह कहकर माऊ उतरने लगा।

"माऊ मैं जा रही हूँ।" पूसी ने चेतावनी दी कि शायद माऊ लौटे, "किसी भी ख़तरे के लिए मुझे दोष मत देना।"

"अच्छा माँ।" माऊ ने माँ को विदा करने के लहज़े में कहा, "मैं यहाँ ख़ूब मज़े में रहूँगा।"

पूसी ने दुखी मन से बच्चे को देखा क्योंकि वह कुछ जानता नहीं लेकिन माँ की बात मानता भी नहीं। वह जितना ख़ुद को क़ाबिल मानने लगा है, उतना वह है कहाँ? ख़ैर उसे जब मेरी ज़रूरत ही नहीं तो मैं भी पीछे क्यों लगी रहूँ .. वह खुश रहे बस। यह सोचकर पूसी चली गई।

"जाने दो पूसी को," गुल्लू ने कहा, "हमारा माऊ तो हमारे पास ही है। ख़ूब दूध पिला-पिलाकर मोटा ताज़ा बना देंगे। पूसी तो वैसे भी ख़ुदगर्ज़ हो चुकी है।"

दिनभर माऊ ख़ूब आज़ादी से उछला कूदा। रसोई से कमरे तक कितनी ही बार छलाँगें लगाईं। ख़ूब शरारतें कीं, माँ तो बेवजह हर वक़्त टोकती रहती थी। दूध पीने में भी कितनी नसीहतें देती। ज़रा भी पानी मिला होता तो सूँघकर छोड़ देती। यही नहीं उसे भी वैसा ही करने को कहती। माऊ का तो मन करता कि 'चप् चप्' करके सारा दूध गटक जाए। पर माँ झिड़क देती - "छि: इसके लिए तो कुत्ते ही बहुत हैं कि रूखा-सूखा जो भी मिल गया लगे दुम हिलाने। हमें तो अपने खान-पान के स्तर का ध्यान रखना चाहिए। एक बार पतला दूध पी लिया तो रोज़ ही पतला ही मिलेगा।"

"अब हर समय तो मलाई मक्खन नहीं मिल सकता ना?" माऊ सोचता। उसे हर समय मुँह चलाते रहना अच्छा लगता था। इसलिए कभी गुल्लू के हाथ से कुछ खाता, कभी नानी के। कभी मिनी के खाने में शामिल हो जाता तो कभी टॉमी के।

माँ की मीनमेख निकालने और शक करने की आदत कुछ अच्छी थोड़े ही है - माऊ आज़ादी पाकर खुश था।

लेकिन शाम होते-होते माऊ को सब कुछ खाली-खाली-सा लगने लगा। उसे लगा कि वह जी भर के खेल चुका है, जी भर के खा चुका है और जी भर के ही ऊधमबाज़ी कर चुका है। अब कुछ भी करने को नहीं बचा। अब क्या करे?

अब न मिनी को डराने में मज़ा आ रहा था न नानी को छकाने में। न गुल्लू की छेड़छाड़ में जान थी न टॉमी की बातों में। वह उदास बेचैन-सा कभी कमरे में जाए तो कभी बाहर आए।

"इसे शायद माँ की याद आ रही है .. अभी छोटा ही तो है," नानी बोली।

माऊ को लगा कि सचमुच अभी वह बहुत छोटा है। उसे माँ की बेहद ज़रूरत है। माँ उसे बेकार ही छोड़कर चली गई। लेकिन उसने भी तो माँ को नाराज़ कर दिया।

अब मुझे केवल माँ चाहिए, केवल माँ - माऊ ने सोचा और बेचैनी से चिल्लाया, "माँ SSS।" उसे लगा कि उसकी आवाज़ कमजोर है, इसलिए छत पर जाकर पुकारने लगा - "माँSSउ। माँSSSS।"

"माऊ! मेरे बच्चे मैं आ रही हूँ।" पूसी कहीं से चिल्लाई।

"मैं जानती थी कि मेरा माऊ मुझे याद करेगा - मेरी ज़रूरत है उसे अभी।" पूसी ने माऊ को प्यार करते कहा। "आओ नीचे चलें ... गुल्लू के पास।" पूसी ने कहा। माऊ ने हैरान होकर माँ की तरफ देखा।

"हाँ ... अब हमें कहीं जाने की ज़रूरत नहीं है। मैंने सब जगह देखा और पाया कि यहाँ से ज़्यादा सुरक्षित जगह और प्यार करने वाले लोग कहीं नहीं हैं।"

घर के सभी लोगों के साथ माऊ अब पहले से ज़्यादा खुश था।

❑ सभी चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

माथापच्ची : हल नवम्बर, 96 अंक के

1. आख़िर के आधे रास्ते मैंने 200 मीटर प्रति मिनट के रफ़्तार से दौड़ लगाई थी।
2. चित्र में बारह त्रिभुज हैं।
3. तीनों तरह की एक-एक किताब चुनने के 40 तरीके हो सकते हैं।
4. (क) मत और तम
   (ख) खास और सखा
   (ग) रत और तर
   (घ) याद और दया
   (ड.) हीरा और राही

वर्ग पहेली 63 का हल

1 ति		2 ख	रा	3 ब		4 ड	5 ग	र
6 न	का	ब		7 र	थ		री	
का		र		सा		8 बे	ब	9 स
	10 का		11 व	त	12 ने			बू
13 के	ला	बा	जी		14 कै	फि	15 ये	त
न्दी			16 रे	17 म	ल		श	
18 ले	19 ख	न		झ		20 अ		21 की
	न		22 गं	धा		23 ना	ह	क
24 जा	न	की		25 रं	ब	डी		र

वर्ग पहेली - 63 के सही हल भेजने वाले पाठक हैं- स्नेहिल आस्था पाटकर, नैनपुर, मण्डला। राकेश मालवीय, सिवनी मालवा; चम्पालाल, अर्जुन, गुलाबबन, हिरनखेड़ा; राकेश कुमार, नीमसाड़िया, मो. आलम खान, इटारसी, सभी होशंगाबाद। इस्माइल राही, मन्दसौर। आदित्य व आस्था शर्मा, नरसिंहपुर। नाहिद खान; योगेश गौर, नर्मदा नगर, मो. मोहसीन खान, सिहाडा, सुशील अग्रवाल सभी खण्डवा। अंशु सिंगारे, बैतूल। शिल्पा दुबे ब्यावरा। अनुपमा पटेल, डोंगरगढ़, राजनांदगाँव। शमा सुल्तान, भोपाल। सुमित श्रीवास्तव, सिवनी। प्रेमलता सिंह, दवेगवाँ, शहडोल। श्वेता पँवार, सेंधवा। सुमित्रा नायक, मुर्रा, रायगढ़। भैंरोलाल चन्द्राकर, रस्मी, रायपुर। इन्द्रबदन चक्रवर्ती, दमोह। मोहन सिंह गहलोत, शुजालपुर मण्डी, शाजापुर। गोविन्द सेन, मनावर, धार। सभी म. प्र.। विमलेश चौहान, किशनगंज, बारौं, राजस्थान।

बन्दर और उसकी माँ

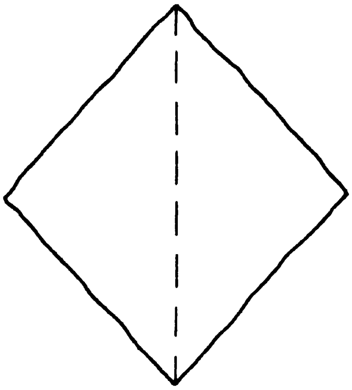

1. एक वर्गाकार कागज़ लो। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से मोड़ बनाओ। मोड़ पक्का करके खोल लो।

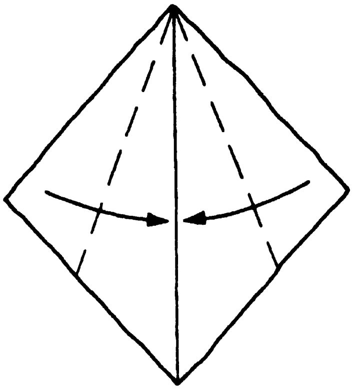

2. अब इस चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ बना लो।

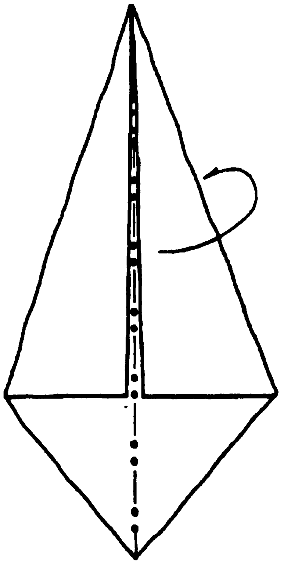

3. यहाँ से चित्र थोड़े बड़े करके दिखाए गए हैं। इस तरह की आकृति बन गई। अब इस चित्र में दिख रही रेखा–बिन्दु वाली रेखा पर से पीछे की ओर मोड़ लो।

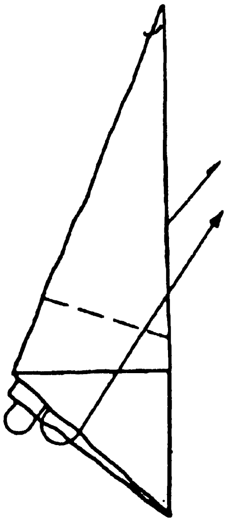

4. इस तरह। आकृति पर दिख रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ। फिर आकृति को पलटकर उस तरफ भी इसी तरह मोड़ बना लो। अब चित्र तीन तक के मोड़ खोल लो और चित्र चार में बनाए मोड़ों के निशान पर से मोड़ लो।

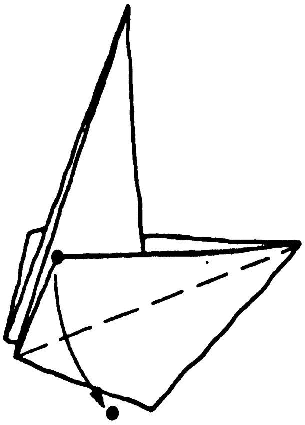

5. इस तरह की आकृति बनेगी। अब आगे चलें। चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से आकृति की बिन्दु वाली परत को तीर की दिशा में मोड़ो। आकृति को पलटकर दूसरी ओर भी इसी तरह मोड़ो।

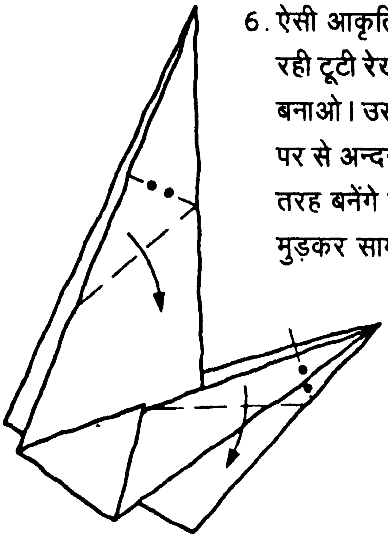

6. ऐसी आकृति बनेगी। पहले इस चित्र में दिख रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ। उसके बाद रेखा–बिन्दु वाली रेखा पर से अन्दर की ओर मोड़ बनाओ। मोड़ इस तरह बनेंगे कि दोनों दोहरी परतें खुलते हुए मुड़कर सामने आ जाएँगी।

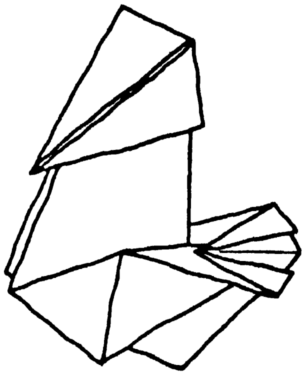

7. इस तरह। ऐसी आकृति बन जाए तब आकृति के ऊपरी हिस्से पर मोड़ बनाने के लिए आगे बढ़ो। आगे के चित्र में ऊपरी हिस्से को बड़ा करके दिखाया गया है।

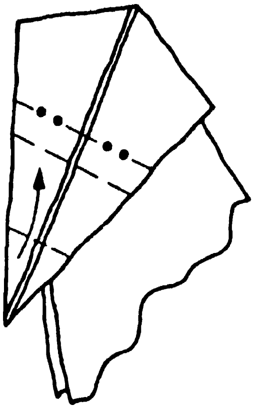

8. इस चित्र में दिख रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बना लो। रेखा–बिन्दु वाली रेखा पर से अन्दर की ओर मोड़ बनाओ।

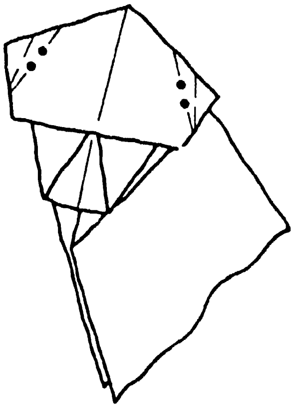

9. इस तरह की आकृति बन जाएगी। अब इसी हिस्से में पहले टूटी रेखा पर से मोड़ बनाओ फिर रेखा–बिन्दु वाली रेखा पर से अन्दर की ओर मोड़ बनाओ।

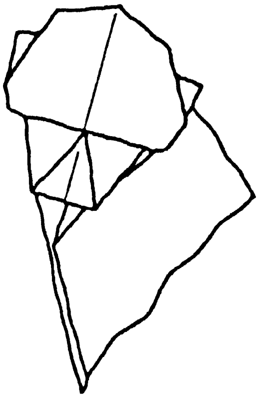

10. इस तरह की आकृति बन जाएगी। यह हो गया बन्दर की माँ का मुँह तैयार। अब इसी तरह बाईं ओर वाले हिस्से पर भी मोड़ बनाओ।

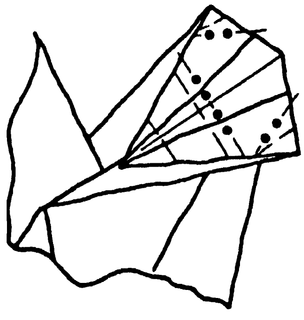

11. इस चित्र में टूटी रेखाओं पर से मोड़ बनाओं। रेखा–बिन्दु वाली रेखाओ पर से अन्दर की ओर मोड़ बनाओ।

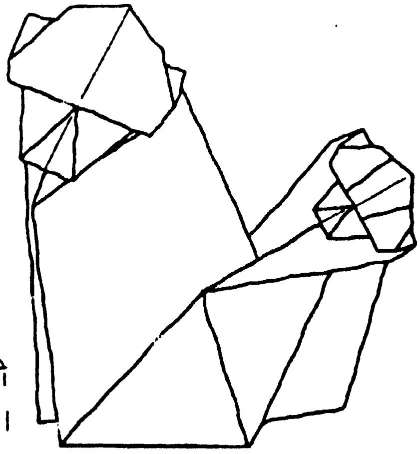

12. यह देखो बन्दर अपनी माँ की पीठ पर बैठा है।

विश्व की खोज और मसाले

स्वतंत्र भारत के पहले प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने आज़ादी के पहले अंग्रेजी राज के दौरान, जेल से अपनी बेटी को कई सारे खत लिखे थे। इनमें उन्होंने इन्दिरा गाँधी को दुनिया के इतिहास की कहानी बताई थी। इन खतों का संग्रह 'विश्व इतिहास की झलक' नाम से एक किताब के रूप में है। इसमें मसालों के व्यापार का जिक्र भी है। इतिहास का यह हिस्सा उनके शब्दों में ही पढ़ो।

5 मई ,1932 को लिखी इस चिट्ठी में नेहरू जी ने भारत का दुनिया के अन्य हिस्सों से व्यापार का ज़िक्र किया है। भारत की रंगसाज़ी और फौलाद के बढ़िया औज़ारों के कारण दूर-दूर तक व्यापार फैला था। इसी चिट्ठी में उन्होंने औज़ार के महत्व, उसके उपयोग और दुरुपयोग की बात करते हुए लिखा है, "औज़ार एक बहुत अच्छी चीज़ है। इससे काम हल्का हो जाता है। लेकिन औज़ार का बुरा इस्तेमाल भी किया जा सकता है। आरी एक काम की चीज़ है, लेकिन एक बच्चा उससे अपने को चोट पहुँचा सकता है।" पत्र में भारत में बनी चीज़ों के व्यापार के साथ काली मिर्च का ज़िक्र भी आया है।

5 मई ,1932

आजकल की दशा के विपरीत, भारत माल तैयार करने के तरीकों में सारी दुनिया से आगे था। इसीलिए भारतीय कपड़े, भारतीय रंग और दूसरी चीज़ें दूर-दूर के मुल्कों में जाती थीं और वहाँ उनकी बड़ी चाह के साथ माँग थी। इस व्यापार से भारत में बाहर का धन आता था। इस व्यापार के अलावा दक्षिण भारत काली मिर्च और दूसरे मसाले बाहर भेजता था। ये मसाले पूर्व के टापुओं से भी आते थे और भारत के रास्ते पश्चिम के देशों को जाते थे। रोम और पश्चिम के देशों में काली मिर्च की बड़ी कीमत थी। कहा जाता है कि गोथों का एक सरदार एलैरिक जिसने 1410 ईसवी में रोम पर अधिकार किया था, 300 पौण्ड काली मिर्च वहाँ से ले गया था। यह सब काली मिर्च या तो भारत से या भारत के रास्ते गई होगी।

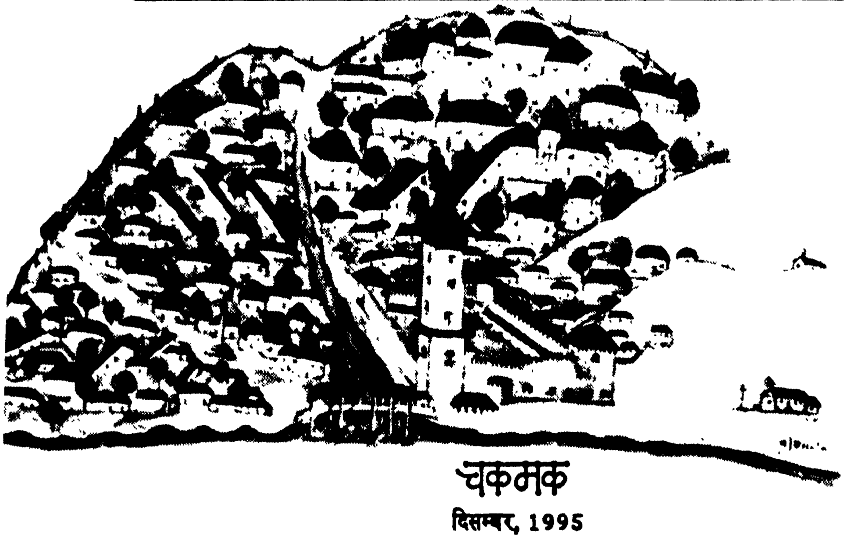

1536 ईसवी का मलक्का का नक्शा।

'समुद्री रास्तों की खोज' नाम के 3 जुलाई, 1932 के पत्र में नेहरू जी ने दुनिया के यात्रियों की समुद्री यात्राओं और सुनहरे पूर्व तक पहुँचने के नए रास्ते खोजने की कोशिश के बारे में लिखा है।

3 जुलाई, 1932

स्कूल का हरेक बच्चा जानता है कि ज़मीन गोल है और सूर्य के चारों तरफ घूमती है। हम लोगों के लिए यह बिल्कुल स्पष्ट बात है। लेकिन पुराने ज़माने में यह इतनी ज़ाहिर नहीं थी और जो लोग ऐसा सोचने या कहने का साहस करते थे, उन्हें ईसाई संघ की नाराज़गी का सामना करना पड़ता था। लेकिन ईसाई संघ का डर होते हुए भी दिन-पर-दिन और ज़्यादा लोग यह मानने लगे कि पृथ्वी गोल है। अगर गोल है तो पश्चिम की ओर जाने से भी चीन और भारत पहुँचना मुमकिन होना चाहिए, ऐसा कुछ लोग सोचते थे। कुछ अफ्रीका का चक्कर काटकर भारत पहुँचने की सोचते थे। याद रहे कि उस वक्त स्वेज़ नहर नहीं थी और जहाज़ भूमध्यसागर से लालसागर नहीं जा सकते थे। भूमध्यसागर और लालसागर के बीच माल और सौदागरी सामान खुश्की के रास्ते शायद ऊँटों पर लादकर भेजे जाते थे, और दूसरी तरफ के जहाज़ों पर लादे जाते थे। यह ढंग सहूलियत का नहीं था। मिस्र और सीरिया पर तुर्कों का कब्ज़ा हो जाने से यह रास्ता और भी मुश्किल हो गया।

19 जुलाई, 1932 को लिखे इस पत्र में पुर्तगालियों के मलेशिया पहुँचने और मसाले का व्यापार शुरू करने का ज़िक्र है।

19 जुलाई, 1932

हमने अपना आखिरी पत्र उस मौके पर खत्म किया था, जब मलेशिया में पुर्तगाली नज़र आने लगे थे। तुम्हें याद होगा कि मैंने तुम्हें कुछ दिन पहले बताया था कि समुद्र के रास्ते कैसे खोजे गए और पुर्तगाल और स्पेन के लोगों में सबसे पहले पूर्व पहुँचने के लिए कैसी दौड़ सी मची थी। पुर्तगाल पूर्व की तरफ गया और स्पेन पश्चिम की तरफ। पुर्तगाल अफ्रीका का चक्कर काटकर भारत पहुँच गया। स्पेन गलती से अमरीका से जा टकराया और बाद में दक्षिण अमरीका का चक्कर काटकर मलेशिया पहुँचा। अब हम अपनी बातों के सिलसिले को जोड़कर मलेशिया की अपनी कहानी आगे बढ़ा सकते हैं।

शायद तुम्हें मालूम हो कि गरम मसाले (काली मिर्च वगैरा) गर्म आबहवा में, यानि भूमध्य-रेखा के आसपास के देशों में पैदा होते हैं, लेकिन ये मसाले ज़्यादातर मलेशिया के टापुओं से जिन्हें मोलुक्का या मलक्का कहते हैं, आते हैं। इन टापुओं को असल में 'मसाले के टापू' कहते हैं। बहुत पुराने

व्यापार के लिए भेजे जाने वाले केसर की चेकिंग, नाप-तौल, पैकिंग और सीलबन्द करने में व्यस्त यूरोपीय व्यापारी।

ज़माने से यूरोप में इन मसालों की बहुत माँग थी और वे बराबर भेजे जाते थे। यूरोप पहुँचते-पहुँचते इनकी कीमत बहुत बढ़ जाती थी। रोमनी ज़माने में काली मिर्च सोने के भाव बिकती थी। हालाँकि मसाले इतने कीमती होते थे और पश्चिम में उनकी इतनी माँग थी, लेकिन यूरोप इनके मँगाने का खुद कोई इंतज़ाम नहीं करता था। बहुत दिनों तक मसाले का व्यापार भारतवासियों के हाथों में था। फिर अरबों के हाथों में आ गया। यह मसालों का ही खिंचाव था जिसने पुर्तगाल और स्पेन के लोगों को उलटी दिशाओं में बढ़ते चले जाने के लिए खींचा और अन्त में उन्हें मलेशिया में लाकर मिला दिया। पुर्तगाली इस खोज में आगे रहे, क्योंकि स्पेन के लोग पूर्व जाते हुए रास्ते में अमेरिका में धन्धे से लग गए और बहुत मुनाफे कमाते रहे।

वास्को डा गामा उत्तमाशा अन्तरीप होता हुआ जब भारत पहुँचा, उसके थोड़े ही दिन बाद बहुत-से पुर्तगाली जहाज़ इसी रास्ते आए और पूर्व की तरफ आगे बढ़ गए। उन्हीं दिनों मसाले और दूसरी चीज़ों का व्यापार मलक्का के नए साम्राज्य के हाथ में था। इसलिए पुर्तगाली इस साम्राज्य से और सारे अरब व्यापारियों से टकरा गए। पुर्तगालियों के वाइसराय अलबुकर्क ने 1511 ईसवी में मलक्का पर कब्ज़ा कर लिया और मुसलमानी तिज़ारत का खात्मा कर दिया। यूरोप में इनकी राजधानी लिस्बन, मसालों और दूसरे पूर्वी मालों को सारे यूरोप में भेजने वाला सबसे बड़ा व्यापारी केन्द्र बन गई।

यह बात ध्यान में रखने लायक है कि अलबुकर्क अरबों का तो बड़ा सख्त और ज़ालिम दुश्मन था। लेकिन वह पूर्व की दूसरी व्यापारी कौमों के साथ दोस्ती रखने की कोशिश करता था। खासकर जितने चीनी उससे

मिलते थे, उन सबके साथ वह खासतौर पर बर्ताव करता था। इसका नतीजा यह हुआ कि पुर्तगालियों के बारे में चीन में बहुत अनुकूल समाचार पहुँचे। शायद अरबों से उसकी दुश्मनी की वजह यह थी कि अरबी लोग पूर्वी व्यापार पर प्रभुत्व जमाए हुए थे।

इस बीच मसाले के टापुओं की तलाश जारी रही। मैगेलन, जिसने बाद में प्रशांत महासागर पार किया और दुनिया का चक्कर लगाया, उस जहाज़ी बेड़े में शामिल था जिसने मलक्का खोज निकाला था। साठ वर्ष से ऊपर यूरोप के साथ मसाले के व्यापार में पुर्तगालियों का कोई बराबरी करने वाला नहीं रहा। फिर 1565 ईसवी में स्पेन ने फिलिपाइन टापुओं पर कब्ज़ा कर लिया और इस तरह पूर्वी समुद्र पर एक-दूसरी यूरोपीय शक्ति का उदय हुआ। लेकिन स्पेन की वजह से पुर्तगालियों के व्यापार में कोई फर्क नहीं पड़ा, क्योंकि स्पेन के लोग स्वभाव से व्यापारी नहीं थे। ये लोग पूर्व को अपने सिपाही और धर्म-प्रचारक भेजते रहे। पुर्तगालियों का मसाले के व्यापार पर एकाधिकार हो गया। यहाँ तक कि ईरान और मिस्र को भी पुर्तगालियों के ही ज़रिए मसाले मँगवाने पड़ते थे। ये लोग किसी दूसरे को मसाले के टापू से सीधा व्यापार करने तक की इजाज़त नहीं देते थे। इसलिए पुर्तगाल मालामाल हो गया, लेकिन उसने उपनिवेश बसाने की कोई कोशिश नहीं की। तुम जानती हो कि पुर्तगाल छोटा-सा देश है और उसके यहाँ बाहर भेजने के लिए काफी आदमी नहीं थे। इस छोटे-से देश ने सौ वर्षों तक यानि सारी सोलहवीं सदी में, पूर्व में जो कुछ किया वह काफी ताज्जुब की चीज़ है।

मलक्का द्वीपों में मसाले नापने के लिए तराज़ू की तरह का एक उपकरण इस्तेमाल किया जाता था। इसे कट्टी कहते हैं। वहाँ कई द्वीपों में अभी भी कट्टी का उपयोग होता है। तुम्हारे आसपास भी इस तरह के कई पारम्परिक नाप इस्तेमाल होते होंगे। पता करो।

इस लेख में आए चित्र द मार्शल कैवेन्डिश इलेस्ट्रेटेड एन्सायक्लोपीडिया ऑफ डिस्कवरी एण्ड एक्सप्लोरेशन तथा वील्स ऑफ ट्रेड एण्ड कॉमर्स से साभार।

प्रस्तुति –कविता सुरेश

माथापच्ची

(1)

एक अंक है जिसमें 8 जोड़ो, फिर 8 घटाओ, फिर 8 से गुणा करो और 8 से भाग दो तो सिर्फ़ 4 मिलेगा। यह अंक कौन-सा है?

(2)

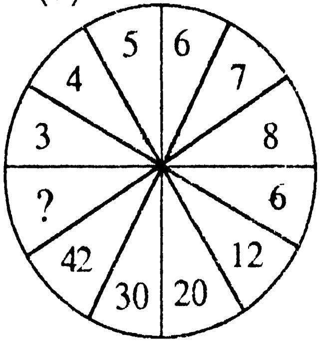

इस गोले में सख्याएँ एक ख़ास क्रम में भरी गई हैं। उस क्रम को ढूँढो और बताओ कि प्रश्न चिन्ह (?) वाले खाने में कौन-सी संख्या आएगी?

(3)

नीचे एक छोटी कहानी लिखी है। यूँ ही सीधे-सीधे इसे पढ़ते जाओ तो कुछ भी सिर-पैर नहीं समझ में आता। वह इसलिए कि इस कहानी में हरेक अक्षर को किसी दूसरे अक्षर में बदल दिया गया है। जैसे हर फ की जगह इसमें ब आया है। इसी तरह हर ब की जगह कुछ और। हाँ हर जगह मात्राएँ और स्वर (अ, आ, इ, ई ——) वैसे ही रखे गए हैं। यानी यह भी एक तरह की संकेत भाषा बन गई है। क्या है यह संकेत भाषा यह तो तुम्हें ढूँढना है। तभी तो कहानी का मज़ा ले पाओगे। कहानी पढ़ो-

एच पिक पो मगेप खूये टेज छये घे। फिज्जी फोजी सुठे त्री टिजाओ। खूये फोजे कयीं। हुस यर्से साछ पोडी। फिज्जी फोजी यां। खूये फोजे त्राडो। मफमे आडे खूया, उमचे झीक्षे फिज्जी।.

(4)

मेरे पिताजी गणित के शिक्षक हैं। एक दिन सुबह दाढ़ी बनाते-बनाते वे मेरी माँ से बोले, "जानती हो, हम दोनों की शादी हुए पूरे बाइस साल हो गए हैं। और तो और हमारी एकमुश्त उम्र (पिता की उम्र + माँ की उम्र) भी इन बाइस सालों में शादी के समय से ठीक दुगुनी हो गई है।" "तो क्या?" माँ ने कहा और अपने काम में लग गईं। मेरी माँ मेरे पिता जी से छह साल छोटी हैं। अब क्या तुम बता सकते हो कि जब उनकी शादी हुई थी तब उनकी उम्र क्या रही होगी? और तब पिता जी की उम्र क्या थी?

(5)

यह बहुत पहले की बात है। तब समुन्दर में हवा के बल पर चलने वाली पाल नौकाएँ चलती थीं। तब के छह जल-दस्युओं के चित्र हैं ये। जल दस्यु यानी जहाजों के लुटेरे। इन छह चित्रों में दो जुड़वाँ भाइयों के चित्र भी हैं। ढूँढ सकते हो उन्हें?

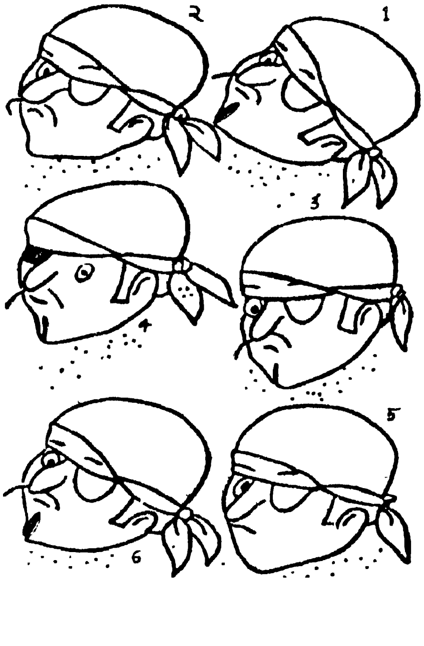

(6)

मान लो तुम किसी गाड़ी में बैठकर जा रहे हो। तुम्हारे हाथ में एक काँच की बोतल है। तुम्हें उसे चलती हुई गाड़ी की तुलना में कौन–सी दिशा में फेंकना चाहिए जिससे ज़मीन से टकराने के बाद उसके टूटने का ख़तरा कम से कम हो? आगे की ओर, पीछे की ओर या सीधे नीचे?

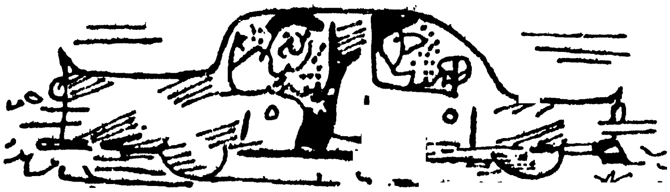

वर्ग पहेली –66

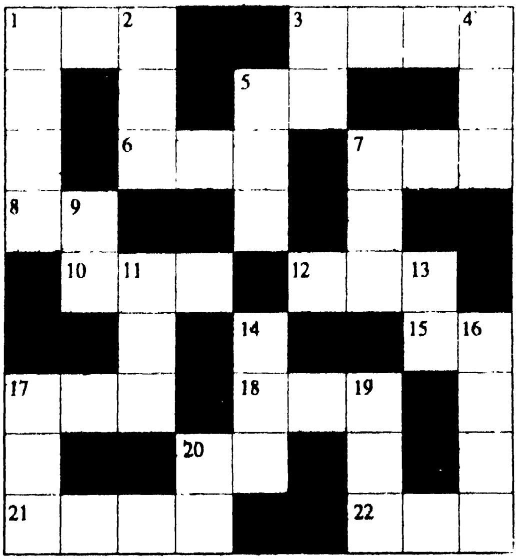

संकेत : बाएँ से दाएँ

1. हकलाना नहीं, बोलना (3)
3. तय था पूँछकटा वह ज्यों का त्यों रहेगा (4)
5. समाप्त या बचा हुआ (2)
6. बकतरा ना जाना, गाना गाना पड़ेगा (3)
7. माहौल अनुकूल है, ठीक है (3)
8. अगर मगर में नस है (2)
10. नाम ही निषेध है (3)
12. कवि रहमत की बिछुड़न (3)
15. थूक (2)
17. एक आगार में किनारे पर (3)
18. यहूद देश का रहने वाला (3)
20. गाय–बैल–घोड़े आदि का सुम (2)
21. दस कदम मे खोजो, उद्देश्य (4)
22. जीभ (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. कहानी लिखने वाले (4)
2. जो तुम्हारी हजामत करता है (3)
3. विराम चिन्ह (2)
4. हमेशा हरा रहने वाला पेड़ (3)
5. बेइमान का सिर काटकर मात्रा बदलो तो पुरस्कार मिलेगा (3)
7. हिरण मारने में दक्ष है (3)
9. सुख (2)
11. ऐसा ज़ख्म जो भरे नहीं (3)
13. तिरंगे का सबसे निचला रंग (2)
14. कौआ गाय चर रही है; पूँछ में है डरपोक (3)
16. राह में नाल है, हिलना–डुलना (4)
17. वाकया मजेदार था, रुकना (3)
19. दर्शन (3)
20. दुख की गड़बड़ में स्वयं (2)

□ राजेश पाटिल, बोरिद, पाटन, दुर्ग, म. प्र. द्वारा बनाई गई वर्ग पहेली पर आधारित

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक तीन माह तक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें, बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों उन्हें संकेत के ही नम्बर देकर लिख दें। वर्ग पहेली – 66 का हल मार्च, 1997 के अंक में देखें।

हम तो हैं बेहद हैरान

राब कहते प्यारा है बचपन, हम तो हैं बेहद हैरान,
पापा कहते बड़ा आलसी, मम्मी कहती है शैतान।

पानी चाय पहुँचना बाहर, मुझको ही दौड़ाते हैं,
बातें करते राब मिल लेकिन मैं पूछूँ खिरियाते हैं।

कोई कहता उठो राबेरे, कोई पाठ कराता याद,
अनुशारित यदि नहीं रहोगे हो जाओगे तुम बरबाद।

ये मत खाना, वो मत करना, सुन-सुनकर थक जाते हम,
बस्ता ट्यूशन डाँट डिसिप्लिन, क्या इनका बोझा है कम?

सब बच्चों के गीत सुनाते, अपना बचपन करते याद,
बच्चों के मन में क्या होता, कौन सुने उनकी फरियाद?

थोड़ा पढ़ें, खूब हम खेलें, कुछ शैतानी भी कर लें,
घूमें फिरें हँसें बोलें हम, कुछ मनमानी भी कर लें।

टाफी बिस्कुट और मिठाई, चाट बताशों का पानी,
अगर मना करते हो तुम राब तो मरती अपनी नानी।

क्या दादा जी ने ये सब खाए बिलकुल कभी नहीं?
या पापा ने सदा पढा है, शैतानी की कभी नहीं?

खेल खेलकर पढ़ने दो, तो हम रवीन्द्र बन जाएँगे,
विद्यालय का बोझ कम करो, तो हम देश सजाएँगे।

❑ भालचन्द्र सेठिया

चित्र: शोभा घारे

धारावाहिक-7

क़िस्सा-बुरातीनो का

अब तक तुमने पढ़ा : जूजेप नाम के एक बढ़ई को बोलने वाला लकड़ी का कुन्दा मिला। जूजेप ने वह कुन्दा अपने दोस्त कार्लो को भेंट कर दिया। कार्लो ने कुन्दे को तराशकर कठपुतला बनाया। उसका नाम रखा - बुरातीनो। वह बहुत शरारती था।

अपनी शरारतों के कारण वह एक बिल्ले और लोमड़ी के चुंगल में फंस गया। जब उनसे पीछा छूटा तो जंगल के रास्ते में दो नकाबपोश डाकुओं से बचते हुए एक छोटे-से घर के सामने पहुँचा। उसने घर का दरवाजा खट-खटाया। लेकिन घर के लोग सो रहे थे। तब तक डाकू पीछे से आ पहुँचे। वे उससे सोने के सिक्के चाहते थे, जो बुरातीनो ने अपने मुँह के अन्दर रखे थे। डाकुओं ने उससे सिक्के छीनने की बहुत कोशिश की और फिर उसे बलूत के पेड़ पर लटकाकर ढाबे की तलाश में निकल गए।

बुरातीनो रात भर लटका रहा। सुबह उसे पास के घर में रहने वाली लड़की नीलकेशिनी ने देखा तो उसे पेड़ से उतरवाया और घर के अन्दर ले गई। जल्दी से उसने डाक्टर घुग्घू और हकीम टिड्डामल को बुलवाया और इलाज करने के लिए कहा। उन्होंने इलाज शुरू किया। अब आगे पढ़ो .....

नीलकेशिनी ने बुरातीनो को शिष्टाचार सिखाना चाहा

सुबह बुरातीनो की आँख खुली तो वह प्रसन्न और स्वस्थ था जैसे कुछ हुआ ही न हो। नीलकेशिनी बगीचे में एक छोटी-सी मेज़ के सामने बैठी उसका इन्तज़ार कर रही थी। मेज़ पर गुड़ियोंवाले छोटे-छोटे बर्तन रखे हुए थे। उसने अभी-अभी मुँह धोया था। चेहरे पर ताज़गी थी। उसकी छोटी-सी नाक और गालों पर पुष्प पराग मला हुआ था।

बुरातीनो की प्रतीक्षा करते हुए वह तितलियों को भगा रही थी जो सिर पर मंडराती हुई उसे तंग कर रही थीं, "बस भी करो न अब...।"

नीलकेशिनी ने घूमकर लकड़ी के लड़के को सिर से पैर तक देखा और भौंहें सिकोड़ लीं। उससे बैठने के लिए कहा और एक छोटे से प्याले में कोको उंडेल दी।

बुरातीनो एक टाँग कुर्सी पर रखकर बैठ गया। बादाम की पेस्ट्रियाँ वह पूरी की पूरी मुँह में ठूँसने और बिना चबाए ही निगलने लगा। मुरब्बे के बर्तन में उसने उंगलियाँ डाल दीं और फिर मज़े से उंगलियाँ चाटने लगा।

लड़की जैसे ही एक अधेड़ उम्र गुबरैले की तरफ कुछ टुकड़े फेंकने के लिए मुड़ी तो बुरातीनो ने केतली पकड़ी और उसकी टोंटी में मुँह लगाकर उसमें रखा सारा कोको पी गया।

तभी उसे हिचकी आई और मेज़पोश पर कोको गिरकर फैल गया।

तब लड़की ने सख़्ती से कहा, "टाँग नीचे करिए और ठीक से बैठिए। हाथ से मत खाइए, खाने के लिए चम्मच और छुरी-काँटे हैं।"

उसने क्रोध से पलकें झपकाईं।

"ज़रा यह तो बताइए कि आपको उठने-बैठने के तौर-तरीक़े कौन सिखाता है?"

"कभी पापा कार्लो और कभी कोई भी नहीं।"

"अब मैं तुम्हें तौर-तरीक़े सिखलाऊँगी।"

"लो, ऐसे आती है मुसीबत!" बुरातीनो ने सोचा।

घर के चारों तरफ घास के मैदान पर कुत्ता आर्तमोन दौड़ लगाते हुए छोटी-छोटी चिड़ियों को उड़ा रहा था। जब वे उड़कर पेड़ पर बैठ जातीं, तो वह गर्दन पीछे करके उछलता और गुर्राता।

"क्या मज़े से चिड़ियाँ उड़ा रहा है!" बुरातीनो को उससे जलन हुई।

शिष्टाचार की जकड़ में बैठे-बैठे उसके सारे शरीर में झुनझुनी फैलने लगी।

अन्त में इस दुखदाई नाश्ते का दौर ख़त्म हुआ। लड़की ने बुरातीनो से कहा कि वह नाक पर लगा कोको पोंछे। खुद अपने कपड़ों की सलवटें और अपने रिबन उसने ठीक किए और बुरातीनो का हाथ

पकड़कर घर के अन्दर ले आई।

ख़ुशमिज़ाज कुत्ता आर्तेमोन घास पर उछल-कूद करता हुआ भौंक रहा था। चिड़ियाँ उससे बिल्कुल न डरती थीं, वे ख़ुशी से चहक रही थीं। मन्द-मन्द हवा वृक्षों की फुनगियों को छूती हुई बह रही थी।

"अपने ये चिथड़े उतारिए, अभी आपको अच्छी जैकेट और पतलून मिलेंगी," लड़की ने कहा।

एकान्तप्रिय उदास केकड़ा, भूरी कलगीवाला कठफोड़वा, सींगवाला बड़ा गुबरैला और चुहिया - इन चार दर्ज़ियों ने मिलकर लड़की के पुराने कपड़ों से लड़के के लिए ख़ूबसूरत जैकेट और पतलून सिलकर तैयार कीं। केकड़े ने उसकी नाप लेकर कपड़े काटे, कठफोड़वे ने चोंच से छेद करके कपड़े सिले, गुबरैले ने पिछली टाँगों से बँटकर धागे बनाए और चुहिया ने उन्हें कुतरने का काम किया।

लड़की के पुराने कपड़े पहनने में बुरातीनो को शर्म लग रही थी, लेकिन कपड़े तो बदलने ही थे। नाक-भौंह चढ़ाते हुए उसने नई जैकेट की जेब में सोने के चार सिक्के सम्भालकर रख लिए।

"अब आप बैठ जाइए, अपने हाथों को सामने रखिए। झुककर मत बैठिए," यह कहकर लड़की ने कुछ लिखने के लिए चाक उठाई। "आज हम लोग गणित का अभ्यास करेंगे ... आपकी जेब में दो सेब हैं ...।"

"झूठ, एक भी नहीं है ...."

"मैं कहती हूँ मान लीजिए कि आपकी जेब में दो सेब हैं। उनमें से एक सेब किसी ने ले लिया तो आपके पास कुल कितने सेब बचे?"

"दो।"

"फिर से अच्छी तरह सोचिए।"

बुरातीनो ने अक़्ल पर इतना ज़ोर डाला कि माथे पर सलवटें उभर आईं और बोला, "दो..."

"लेकिन कैसे?"

"मैं तो एक भी सेब किसी को नहीं दूँगा। भले ही वह झगड़ा कर ले!"

"गणित तो आपके पल्ले ही नहीं पड़ता। आइए, इमला लिखते हैं," लड़की ने दुखी मन से कहा। उसने अपनी आकर्षक आँखों से ऊपर की तरफ देखते हुए कहा, "हाँ, तो लिखिए, 'गुलाब अज़ोर के पंजे पर गिर पड़ा।' लिख लिया? अब इस वाक्य को पढ़िए।"

हम यह जानते हैं कि बुरातीनो ने अपने छोटे से जीवन काल में कलम-दवात देखी तक नहीं थी।

लड़की ने कहा, "लिखिए," - और उसने तुरन्त अपनी नाक दवात के अन्दर घुसेड़ दी। जब उसकी नाक से स्याही टपककर काग़ज़ पर फैल गई तो वह बुरी तरह डर गया।

लड़की ने हाथ झटके, उसकी आँखों में आँसू छलछला आए, "आप गंदे शरारती बच्चे हैं, आपको सज़ा मिलनी चाहिए!"

लड़की ने खिड़की से झाँककर आवाज़ दी, "आर्तेमोन, बुरातीनो को अंधेरी कोठरी में बन्द कर दो!"

वफ़ादार आर्तेमोन ड्योढ़ी पर हाज़िर था, उसके चमकीले दाँत दिखलाई पड़ रहे थे। कुत्ते ने बुरातीनो की जैकेट पकड़ी और उसे घसीटते हुए अंधेरी कोठरी में ले गया जहाँ चारों तरफ मकड़ी का जाल फैला हुआ था और उसमें बड़ी-बड़ी मकड़ियाँ लटक रही थीं। कुत्ते ने कोठरी में ताला

लगाया, बुरातीनो को डराने के लिए गुर्राया और पुनः चिड़ियों के पीछे दौड़ गया।

लड़की गुड़ियोंवाले निवाड़ के पलंग पर जा गिरी और फूट-फूटकर रोने लगी। वह इस बात पर दुखी थी कि उसे साथ इतनी सख़्ती से पेश आना पड़ा। लेकिन जब उसे शिक्षित करने और शिष्टाचार सिखाने की उसने ठानी है तो यह काम उसे पूरा करना ही है।

इधर बुरातीनो अंधेरी कोठरी में बड़बड़ा रहा था, "बेवकूफ़ कहीं की ... बड़ी आई तमीज़ सिखाने वाली ... इसकी अपनी तो खोपड़ी चीनी मिट्टी की है और शरीर में भूसा ही भूसा भरा हुआ है ....!"

बुरातीनो को कोठरी में चीं-चीं की महीन आवाज़ सुनाई दी जैसे कोई नन्हे-नन्हे दाँत पीस रहा हो, "सुनो, सुनो ..!"

बुरातीनो ने स्याही से काली हुई अपनी नाक ऊपर उठाई और छत से नीचे की तरफ सिर लटकाए चमगादड़ को देखा।

"क्या बात है?"

"क्या बात है?"

"बस, रात होने का इन्तज़ार करो, बुरातीनो।"

"ख़ामोश, ख़ामोश, हमारे मकड़जाल को मत हिलाओ, हमारी मक्खियों को डराकर मत भगाओ...!" कोनों से मकड़ियों की आवाज़ें सुनाई दीं।

बुरातीनो ने एक टूटे हुए घड़े पर बैठकर गालों पर अपने हाथ टिका लिए। मुसीबतें तो वह इससे कहीं बड़ी देख चुका था, उसे गुस्सा बस अन्याय पर आ रहा था।

"ऐसे भी क्या बच्चों को शिष्टाचार सिखाया जाता है? यह तो यातना है, शिष्टाचार और तौर-तरीक़ा सिखाने जैसी बात नहीं ... ऐसे मत बैठो, ऐसे मत खाओ ... अभी क ख ग सीखा नहीं, लिखने के लिए दवात पकड़ा दी ... कुत्ता तो मज़े से चिड़ियाँ उड़ा रहा है - उसे क्या ... "

चमगादड़ फिर से चिचियाया, "रात होने का इन्तज़ार करो, मैं तुम्हें अपने साथ मूरखनगरी में ले चलूँगा, वहाँ तुम्हारे मित्र - बिल्ला और लोमड़ी, खुशियाँ और सौभाग्य तुम्हारा इन्तज़ार कर रहे हैं। बस, रात होने तक प्रतीक्षा करो!" ◻ ◻

(अगले अंक में जारी)

(सोने की चाबी - क़िस्सा बुरातीनो का से साभार,
लेखक : अलेक्सांई तोलस्तोय,
सभी चित्र : अकलेक्सान्द्र कोशिकन)

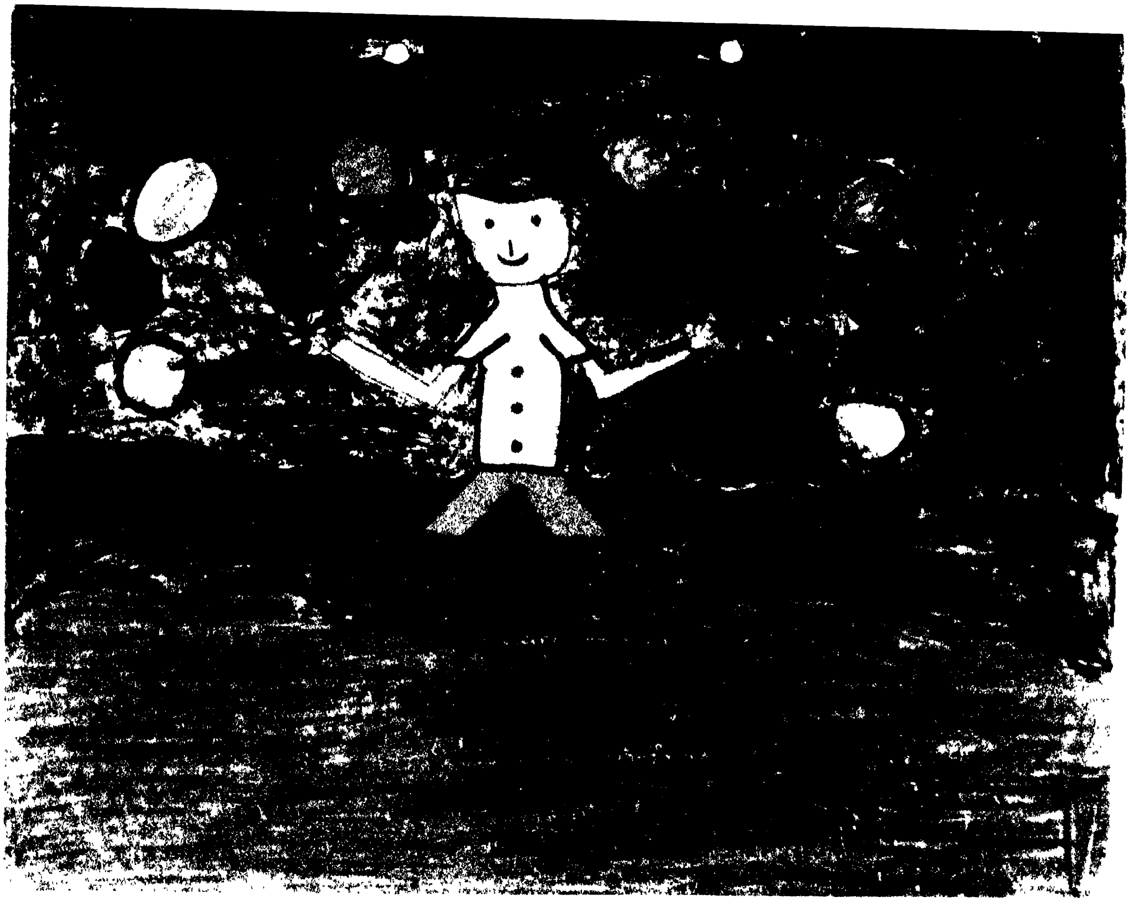

▲ कुहू तनवीर, पाँचवीं, दिल्ली

▼ अर्पित जैन, आठ वर्ष, कानपुर, उ.प्र.

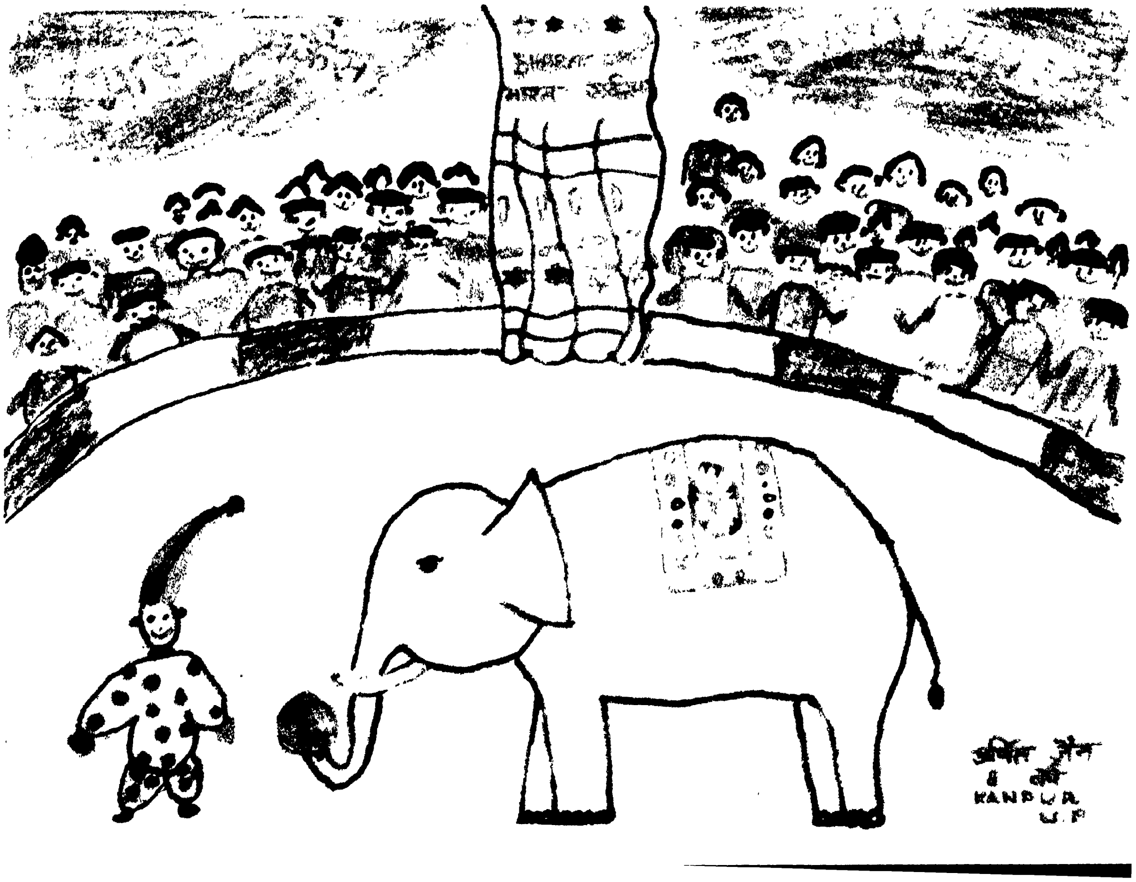

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/96

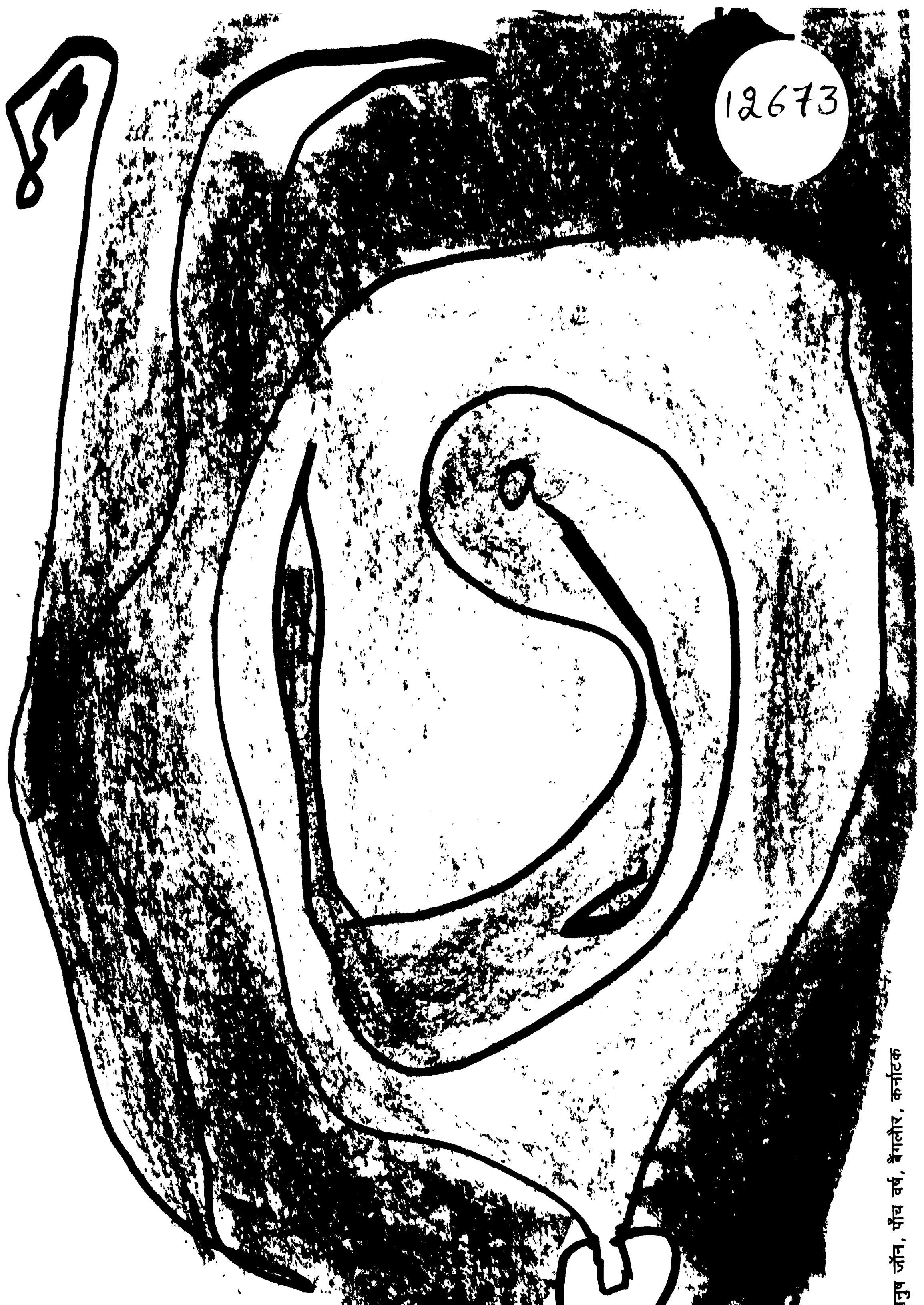

कीचड़ में गिरे एक पैराशूट के अन्दर मछली

मानुष जॉन, पाँच वर्ष, बैंगलोर, कर्नाटक

रेक्स डी रोजारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना